بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly Badar Qadian

HINDI

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11 | अंक -39

12 रबीउल सानी 1448 हिज्री कमरी, 24 तबूक 1405 हिज्री शम्सी, 24 सितंबर 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ ؕ وَلَذِکۡرُ اللّٰہِ اَکۡبَرُ ؕ وَاللّٰہُ یَعۡلَمُ مَا تَصۡنَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾ (العنکبوت:46)

अनुवाद: तू किताब में से, जो तेरी ओर वह्यी की जाती है, पढ़कर सुना और नमाज़ कायम कर। निश्चय ही नमाज़ बेहयाई और हर नापसंद बात से रोकती है। और अल्लाह का ज़िक्र निश्चित रूप से सभी (ज़िक्रों) से बड़ा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

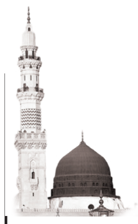

अल्लाह तआला नमाज़ के ज़रिए गुनाहों को मिटा देता है

عَنۡ أَبِي هُرَيۡرَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ، يَقُولُ: "أَرَأَيۡتُمۡ لَوۡ أَنَّ نَهَرًا بِبَابِ أَحَدِكُمۡ يَغۡتَسِلُ فِيهِ كُلَّ يَوۡمٍ خَمۡسًا مَا تَقُولُ ذٰلِكَ يُبۡقِي مِنۡ دَرَنِهِ، قَالُوا: لَا يُبۡقِي مِنۡ دَرَنِهِ شَيۡئًا، قَالَ: فَذٰلِكَ مِثۡلُ الصَّلَوَاتِ الۡخَمۡسِ، يَمۡحُو اللّٰهُ بِهِ الۡخَطَايَا". (صحیح البخاری، کتاب مواقیت الصلوٰۃ، باب الصلوٰۃ الخمس کفارۃ للخطایا)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना:

"भला बताओ तो सही कि अगर तुममें से किसी के दरवाज़े पर पानी की एक नहर बहती हो और वह हर रोज़ पाँच बार उसमें नहाए, तो क्या तुम समझते हो कि उसका उसमें पाँच बार नहाना उसके शरीर पर कुछ मैल-कुचैल बाकी रखेगा?" लोगों ने कहा: "नहीं, ज़रा भी मैल नहीं रखेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तो यही पाँचों नमाज़ों की मिसाल है। अल्लाह तआला इसके ज़रिए गुनाहों को मिटा देता है।"

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

नमाज़ वास्तव में रब्बुल-इज़्ज़त से दुआ है, जिसके बिना इंसान ज़िंदा नहीं रह सकता

नमाज़ क्या चीज़ है? नमाज़ वास्तव में रब्बुल-इज़्ज़त से दुआ है, जिसके बिना इंसान ज़िंदा नहीं रह सकता और न ही सेहत और खुशी का सामान मिल सकता है। जब खुदा तआला उस पर अपना फ़ज़ल करेगा, उस समय उसे असली खुशी और आराम मिलेगा। उसी समय से उसे नमाज़ों में आनंद और रुचि आने लगेगी। जिस तरह स्वादिष्ट भोजन खाने से आनंद मिलता है, उसी तरह फिर रोने और गिड़गिड़ाने में भी आनंद आने लगेगा और नमाज़ की यह अवस्था पैदा हो जाएगी।

इससे पहले, जैसे कोई कड़वी दवा इस लिए खाता है कि सेहत हासिल हो, उसी तरह नमाज़ में रुचि न होने के बावजूद उसे पढ़ना और दुआएँ माँगना ज़रूरी है। इस बेरुचि की अवस्था में यह मानकर कि इससे आनंद और रुचि पैदा हो, यह दुआ करे कि:

"हे अल्लाह! तू मुझे देखता है कि मैं कितना अंधा और नेत्रहीन हूँ और इस समय मैं बिल्कुल मुर्दा अवस्था में हूँ। मैं जानता हूँ कि थोड़ी देर के बाद मुझे आवाज़ दी जाएगी तो मैं तेरी ओर आ जाऊँगा। उस समय मुझे कोई रोक नहीं सकेगा, लेकिन मेरा दिल अंधा और अनजान है। तू उस पर ऐसा प्रकाश का शोला उतार कि उसमें तेरा प्रेम और तेरी चाहत पैदा हो जाए। तू ऐसा फ़ज़ल कर कि मैं अंधा न उठूँ और अंधों में शामिल न हो जाऊँ।"

जब वह इस प्रकार दुआ माँगेगा और उस पर कायम रहेगा, तो वह देखेगा कि एक समय ऐसा आएगा जब इसी बेरुचि वाली नमाज़ में आसमान से उस पर एक ऐसी चीज़ गिरेगी, जो उसके दिल में नरमी पैदा कर देगी।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 481, संस्करण 2022 ई.)

تفسیر کبیر

नमाज़ में खर्च होने वाला समय बेहयाई और बुराइयों से बचाता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल-अनकबूत की आयत 46 की तफ़्सीर में बयान फ़रमाते हैं:

اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ नमाज़ निश्चित रूप से बुरी और नापसंद बातों से लोगों को रोकती है। उन बुरी बातों से भी जो इंसान की अपनी ज़ात से संबंध रखती हैं और उनसे भी जो समाज पर भारी पड़ती हैं। क्योंकि मुसलमानों में नमाज़ बाजमाअत पाँच समय के लिए निश्चित है। अगर नमाज़ बाजमाअत उनमें कायम हो जाएगी तो उनका बहुत-सा समय खुदा तआला की इबादत में लग जाएगा। और नमाज़ में खर्च होने वाला समय उन्हें बेहयाई और बुराइयों से बचाता रहेगा। इसी तरह नमाज़ में जब दुआएँ होती रहेंगी, अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी, तो वे दुआएँ खुदा तआला का फ़ज़ल खींचकर उनकी अपनी सुधार का भी कारण बनेंगी और दूसरों की सुधार और तरक़्क़ी का कारण भी बन जाएँगी। इसी तरह नमाज़ में जो क़ुरआन करीम की आयतें पढ़ी जाती हैं और तस्बीह व तहमीद की अधिकता होती है, उसका दिल पर ऐसा प्रभाव होता है कि इंसान गुनाहों से नफ़रत करने लगता है।

अर्थात اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ के तुरंत बाद اَقِمِ الصَّلٰوۃَ और اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ का ज़िक्र फ़रमाकर इस ओर संकेत फ़रमाया कि दुआओं के बिना पाकीज़गी हासिल नहीं हो सकती। क़ुरआन की तिलावत से तुम दुनिया के विचारों को बेशक बदल सकते हो। लेकिन दुनिया में पाकीज़गी अल्लाह के फ़ज़ल के बिना नहीं हो सकती और यह फ़ज़ल दुआओं से ही हासिल होगा। इसलिए नमाज़ें पढ़ो और दुआएँ माँगो, ताकि अल्लाह तआला ने जिस उद्देश्य के लिए तुम्हें खड़ा किया है, उसमें तुम्हें सफलता हासिल हो।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 10, पृष्ठ 412)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अह्याए-मौता का महान निशान!

जीवन का वास्तविक उद्देश्य तक़वा प्राप्त करना है

सैयदना हज़रत अक़्दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम, जिनको अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद और महदी मअहूद के पद पर नियुक्त फ़रमाया है, आपने मसीह के समान होने का दावा फ़रमाया था। और मसीह के बारे में क़ुरआन मजीद और इंजील में लिखा है कि वे अल्लाह के आदेश से मुर्दों को जीवित करते थे और बीमारों को अच्छा करते थे। अंधों को दृष्टि प्रदान करते थे, यद्यपि इसका अर्थ रूहानी मुर्दों को जीवन देना, रूहानी बीमारों को अच्छा करना और रूहानी अंधों को दृष्टि प्रदान करना है। लेकिन इसमें भी कोई संदेह नहीं कि अल्लाह ने केवल अपने फ़ज़्ल से मसीह और दूसरे नबियों, विशेष रूप से हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह शक्ति भी प्रदान की थी कि शारीरिक रूप से भी जो लोग मौत के मुँह में जा चुके थे और मरणासन्न थे और जिनके इलाज से दुनियावी डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिए थे, ऐसे रोगियों को भी उन्होंने मौत के मुँह से निकाला है।

ऐसे ही महान चमत्कार आज हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से भी प्रकट हुए हैं। इन निशानों को देखकर उन पहले नबियों और हज़रत मसीह के निशानों पर भी पूर्ण विश्वास पैदा होता है, वरना वे तो आज के इस युग में केवल सुनी-सुनाई बातों के रूप में हैं।

नीचे सैयदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ऐसे ही सैकड़ों चमत्कारों में से फिलहाल केवल एक चमत्कार का उल्लेख किया जाता है।

1906 ई. का उल्लेख है। क़ादियान में एक विद्यार्थी, जिसका नाम अब्दुल करीम था, पढ़ने के लिए आया और मदरसा अहमदिया क़ादियान के चौथे वर्ष में दाख़िल हुआ। उसके साथ क्या घटना घटी, वह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक शब्दों में पढ़िए!

"अब्दुल करीम नाम, पुत्र अब्दुर्रहमान, निवासी हैदराबाद दक्कन, हमारे मदरसे में एक लड़का विद्यार्थी है। क़ज़ा व क़दर से उसे पागल कुत्ते ने काट लिया। हमने उसे इलाज के लिए कसौली भेज दिया। कुछ दिनों तक उसका कसौली में इलाज होता रहा, फिर वह क़ादियान वापस आया। थोड़े दिन गुज़रने के बाद फिर उसमें पागलपन के वे लक्षण प्रकट हुए जो पागल कुत्ते के काटने के बाद प्रकट हुआ करते हैं और वह पानी से डरने लगा तथा भयावह अवस्था पैदा हो गई। तब इस ग़रीब-उल-वतन असहाय के लिए मेरा दिल बहुत बेचैन हुआ और दुआ के लिए एक विशेष ध्यान पैदा हो गया। हर व्यक्ति समझता था कि वह ग़रीब कुछ घंटों के बाद मर जाएगा। मजबूर होकर उसे बोर्डिंग से बाहर निकालकर एक अलग मकान में दूसरों से अलग, हर सावधानी के साथ रखा गया और कसौली के अंग्रेज़ डॉक्टरों की ओर तार भेज दिया गया और पूछा गया कि क्या इस अवस्था में उसका कोई इलाज भी है। वहाँ से तार द्वारा उत्तर आया कि अब उसका कोई इलाज नहीं है।

लेकिन इस ग़रीब और बे-वतन लड़के के लिए मेरे दिल में बहुत ध्यान पैदा हो गया और मेरे दोस्तों ने भी उसके लिए दुआ करने पर बहुत ज़ोर दिया, क्योंकि इस ग़रीबी की हालत में वह लड़का दया के योग्य था और साथ ही दिल में यह भय पैदा हुआ कि यदि वह मर गया तो एक बुरे रूप में उसकी मौत दुश्मनों के लिए ख़ुशी का कारण होगी। तब मेरा दिल उसके लिए बहुत दर्द और बेचैनी में पड़ गया और असाधारण ध्यान पैदा हुआ, जो अपने अधिकार से पैदा नहीं होता बल्कि केवल ख़ुदा तआला की ओर से पैदा होता है और यदि पैदा हो जाए तो ख़ुदा तआला के आदेश से ऐसा प्रभाव दिखाता है कि उसके द्वारा मुर्दा जीवित हो जाए।

अर्थात उसके लिए अल्लाह की ओर पूरी तरह झुकने की अवस्था प्राप्त हो गई और जब वह ध्यान अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया और दर्द ने मेरे दिल पर पूरा अधिकार कर लिया, तब उस रोगी पर, जो वास्तव में मुर्दा था, इस ध्यान के प्रभाव प्रकट होने शुरू हो गए। या तो वह पानी से डरता था और रोशनी से भागता था, या अचानक उसकी तबीयत ने स्वास्थ्य की ओर रुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं लगता। तब उसे पानी दिया गया तो उसने बिना किसी डर के पी लिया, बल्कि पानी से वुज़ू करके नमाज़ भी पढ़ ली और पूरी रात सोता रहा और भयावह और जंगली जैसी अवस्था समाप्त हो गई, यहाँ तक कि कुछ दिनों में वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया।

मेरे दिल में तुरंत यह बात डाली गई कि यह पागलपन की अवस्था जो उसमें पैदा हुई थी, इसलिए नहीं थी कि वह पागलपन उसे मार डाले, बल्कि इसलिए थी कि ताकि ख़ुदा का निशान प्रकट हो। और अनुभवी लोग कहते हैं कि दुनिया में कभी ऐसा देखने में नहीं आया कि ऐसी अवस्था में, जब किसी को पागल कुत्ते ने काटा हो और पागलपन के लक्षण प्रकट हो गए हों, फिर कोई व्यक्ति उस अवस्था से बच सके।"

(ततिम्मा हक़ीक़तुल-वही, पृष्ठ 46-47)

आज जबकि Rabies के इंजेक्शन की खोज हुए डेढ़ सौ वर्ष से अधिक का समय हो चुका है और इसके आविष्कारक LOUIS PASTEUR की यह खोज साल-दर-साल सफल चरणों से गुज़र रही है और पागल कुत्ते के काटने के बाद इस टीके का सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है और रोगी की जान बच जाती है। लेकिन अब तक ऐसा कोई इलाज खोजा नहीं गया कि जिस रोगी पर पागलपन का दौरा पड़ जाए, उस पर फिर यह वैक्सीन काम कर सके।

लेकिन सैयदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ख़ुदा ने यह चमत्कार दिखाया कि जिस व्यक्ति पर पागलपन का दौरा पड़ गया और सारी निशानियाँ प्रकट हो गईं और डॉक्टरों ने लिखित रूप में उत्तर दे दिया कि

"Sorry Nothing Can be done for Abdul Kareem"

इसके बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं से अल्लाह ने यह चमत्कार प्रकट फ़रमाया कि अल्लाह ने हज़रत अब्दुल करीम साहब को शिफ़ा प्रदान की। मेडिकल साइंस में यह एक ऐसी हैरान करने वाली घटना है जिसकी मिसाल आज तक दुनिया में नहीं मिलती और निश्चय ही यह हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का जीवित और चमकता हुआ निशान है।

अब्दुल करीम साहब के साथ यह घटना 1907 ई. में पेश आई। इसके बाद 1939 ई. में उनकी मृत्यु हुई। अर्थात हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ की क़बूलियत के इस चमत्कार के बाद आप बत्तीस वर्ष जीवित रहे और स्वस्थ जीवन बिताया। आप यादगीर, कर्नाटक के निवासी थे। क़ादियान से वापस जाने के बाद फ़ज़्ले-इलाही से यादगीर और दूसरे क्षेत्रों में जमाअती सेवाएँ भी करते रहे। यादगीर में आप बतौर ख़तीब जुमा का ख़ुत्बा दिया करते रहे। आपके दो पोते, मुकर्रम ज़ुबैर अहमद साहब और ख़ालिद अहमद साहब, अभी भी यादगीर में जीवित हैं और सक्रिय जीवन बिता रहे हैं। अल्हम्दुलिल्लाह।

क़ादियान दारुल-अमान में भी फ़ज़्ले-इलाही से आपकी नस्ल के कुछ लोग निवास करते हैं। सुब्हानल्लाह! अह्याए-मौता का यह क्या ही महान निशान है। अह्याए-मौता के ऐसे ही बीसियों निशान हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से अल्लाह तआला ने प्रकट फ़रमाए हैं।

अतः हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में भी ऐसा ही अह्याए-मौता साबित है, यह नहीं कि वे वास्तविक मुर्दों को फिर से जीवित कर देते थे। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"असल में.... अह्याए-मौता पर हमारा यह ईमान नहीं है.... न अह्याए-मौता से यह मतलब है कि वास्तविक मुर्दे को जीवित किया गया.... अह्याए-मौता के ये अर्थ हैं कि (1) रूहानी जीवन प्रदान किया जाए (2) यह कि दुआ के माध्यम से ऐसे इंसान को शिफ़ा दी जाए कि वह मानो मुर्दों में गिना जा चुका हो, जैसा कि आम बोलचाल में कहा जाता है कि फलाँ तो मरकर जी गया। अह्याए-मौता से मुराद भी ख़तरनाक रूप से बीमार लोगों का स्वस्थ होना है।" (बद्र, 7 फ़रवरी 1907 ई., पृष्ठ 4)

और वास्तव में इन निशानों का प्रकट होना जहाँ सैयदना हज़रत अक़्दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहिस्सलाम की सच्चाई को प्रकट करता है, वहीं इनसे इस बात का भी प्रमाण मिलता है कि जिस आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का आप दावा करते हैं, वे भी सच्चाई का प्रकाश और सच्चाई का मीनार थे।

आप फ़रमाते हैं: "ख़ुदावंद करीम ने इस रसूल मक़्बूल की पैरवी और मुहब्बत की बरकत से और अपने पवित्र कलाम की पैरवी के प्रभाव से इस ख़ाकसार को अपने संबोधनों से विशेष किया है और लदुन्नी ज्ञान से सम्मानित फ़रमाया है और बहुत से छिपे हुए रहस्यों की जानकारी दी है और बहुत से तथ्यों और ज्ञान से इस तुच्छ के सीने को भर दिया है और बार-बार बता दिया है कि ये सभी उपहार और कृपाएँ और ये सभी विशेष अनुग्रह और एहसान और ये सभी मेहरबानियाँ और ध्यान और ये सभी सहायता और इनाम और ये सभी वार्तालाप और संबोधन हज़रत ख़ातमुल-अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी और मुहब्बत के कारण हैं।

जमाल हमनशीं दर मन असर कर्द
वगरना मन हमाँ ख़ाकम कि हस्तम"

جمالِ ہمنشیں در من اثر کرد
"وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم

(बराहीने अहमदिया, पृष्ठ 623, हाशिया नंबर 11)

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 31 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

अल्लाह तआला के फज़ल से पिछले रविवार को जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का तीन दिन का जलसा सालाना, अल्लाह तआला के फज़लों को समेटते हुए अपने समापन को पहुँचा।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछले रविवार को जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का तीन दिन का जलसा सालाना अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को समेटते हुए अपने समापन को पहुँचा।

जलसे की तैयारी में महीनों लगते हैं। बल्कि हर साल के जलसे के बाद ही तैयारी शुरू हो जाती है और इसका ज़ोर जलसे से कुछ सप्ताह पहले शुरू हो जाता है, लेकिन जलसे से एक-दो सप्ताह पहले तो यह बहुत अधिक बढ़ जाता है और जलसे के दिनों में तो हज़ारों स्वयंसेवक कार्यकर्ता लड़कियाँ, महिलाएँ, बच्चे, पुरुष, बूढ़े और जवान अपनी पूरी क्षमता और सच्चे मन से हर समय सेवा कर रहे होते हैं। ये न केवल अहमदी मेहमानों को सुविधा पहुँचा रहे होते हैं बल्कि जलसे में आने वाले दुनिया के विभिन्न देशों से गैर-जमाअत और गैर-मुस्लिम मेहमानों की ज़रूरतें पूरी करने के साथ इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश करके एक शांत प्रचार भी कर रहे होते हैं। इसलिए इस लिहाज़ से

सभी कार्यकर्ता जो जलसे के किसी भी विभाग में काम करते रहे हैं, धन्यवाद के योग्य हैं। अल्लाह तआला उन्हें उनकी सेवा का सर्वोत्तम बदला दे।

इसी तरह जलसे में सीधे सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं के अलावा

एम.टी.ए. के कार्यकर्ता हैं, जिनमें बहुत से स्वयंसेवक शामिल हैं। ये भी धन्यवाद के योग्य हैं, जिन्होंने बहुत अच्छे ढंग से जलसे के कार्यक्रमों को दुनिया के हर कोने तक पहुँचाने के लिए भरपूर प्रयास किया। यह भी प्रचार का एक बड़ा माध्यम है।

इसी तरह प्रेस एंड मीडिया ने भी समाचार पहुँचाने में अपना योगदान दिया, जिसमें केंद्रीय प्रेस विभाग भी शामिल है, यू.के. का प्रेस विभाग भी शामिल है और करोड़ों लोगों तक संदेश पहुँचा। इसमें महिलाएँ और पुरुष सभी शामिल हैं।

इसी तरह हर साल की तरह यहाँ कार्यकर्ताओं की सहायता के लिए

इस साल भी ख़ुद्दामुल अहमदिया कनाडा के बहुत से स्वयंसेवक आए हैं, जो जलसे के बाद सामान समेटने का काम, जलसे के वाइंड-अप का काम करते हैं और अब ऑस्ट्रेलिया वाले भी आना शुरू हो गए हैं। और ये बहुत अच्छे ढंग से काम कर रहे हैं और ये सभी भी धन्यवाद के योग्य हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी बदला दे।

बहरहाल, काम करने वालों का जो गैरों पर प्रभाव होता है, उससे जमाअत और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर उनके सामने पेश होती है, जिससे वे बहुत प्रभावित होते हैं। बहुत से लोग अपनी टिप्पणियाँ लिखकर भेजते हैं और धन्यवाद भी देते हैं। और ऐसी कुछ टिप्पणियाँ मैं इस समय पेश भी करूँगा। जो कुछ मैंने ली हैं, वे भी शायद पेश न हो सकें, लेकिन बहरहाल कुछ पेश करूँगा। इसी तरह

मैं स्वयं भी सभी कार्यकर्ताओं और कार्यकर्त्रियों का धन्यवाद करता हूँ। उन्होंने बहुत निःस्वार्थ सेवा की, लेकिन साथ ही इन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि उन्हें भी अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने इन सभी कार्यकर्ताओं को यह अवसर दिया कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा करें। लोगों द्वारा शुक्रगुज़ारी के भाव व्यक्त करने से आपको और अधिक विनम्र होना चाहिए। और अधिक अल्लाह तआला के सामने झुकना चाहिए और उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए। अल्लाह तआला इसकी भी आपको तौफ़ीक़ दे।

जैसा कि मैंने कहा कि मैं प्रतिक्रियाएँ पेश करूँगा, तो इस समय जो पहली प्रतिक्रिया मेरे सामने है, वह

गाम्बिया के संचार और डिजिटल अर्थव्यवस्था के मंत्री लामिन जाबी साहब की है। वे कहते हैं कि जलसा सालाना को देखकर मैं एक गहरी सच्चाई पर हैरान रह गया। यह एक महान विश्वव्यापी सम्मेलन है, जो निःस्वार्थ सेवा और शांत, अडिग बलिदान की नींव पर स्थापित है। यह जानकर दिल गहराई से प्रभावित होता है कि इतने बड़े स्तर का यह सम्मेलन क़ादियान में केवल 75 व्यक्तियों से शुरू हुआ था और आज प्रशासन की दृष्टि से एक अद्भुत उदाहरण का रूप ले चुका है। सैटेलाइट के माध्यम से दुनिया के दो सौ देशों में यह सम्मेलन दिखाया जाता है और मुझे यह बात भी हैरान करती है कि व्यवस्था के लिए किसी पुलिस की आवश्यकता नहीं है। कोई भौतिक लालच नहीं है। कॉरपोरेट अधिकारी, डॉक्टर, युवा अपने सांसारिक पद एक ओर रखकर स्वयंसेवक के रूप में फर्श साफ कर रहे थे, आग पर खाना पका रहे थे, यातायात का मार्गदर्शन कर रहे थे और जब नमाज़ के लिए अज़ान हुई तो विभिन्न राष्ट्रीयताओं से बना यह उत्साही समूह तुरंत पूरी तरह शांत हो गया, यहाँ तक कि सुई गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे सके। इस दृश्य ने मुझे सामूहिक अनुशासन और आध्यात्मिक जुड़ाव का ऐसा जीवंत एहसास दिया जो आज की भौतिक दुनिया में व्यवहारिक रूप से समाप्त हो चुका है।

फिर कहते हैं कि विश्व बैअत में शामिल होना, जहाँ आँसुओं से भरी एक मानवीय कड़ी हज़ारों लोगों को उनके इमाम से जोड़ देती है, इसने मेरे लिए इस अनोखे संबंध को अविश्वसनीय बना दिया। मेरा स्थायी प्रभाव यह है कि जमाअत का महान वैश्विक प्रभाव किसी भौतिक धन या राजनीतिक उद्देश्यों का परिणाम नहीं, बल्कि पूर्ण तक़्वा और शांति के एक सच्चे व्यावहारिक संदेश से जुड़ाव का फल है।

नाइजीरिया से एक राज्य के राजा ओबा केहिन्दे बादे वूले हैं। लगभग आधा राज्य उनके अधीन है। वे कहते हैं: जब मैं जलसा सालाना यू.के. में शामिल होने के लिए रवाना हुआ तो मुझे बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि मैं एक महान, व्यवस्थित और आध्यात्मिक सम्मेलन का हिस्सा बनने जा रहा हूँ, जो मेरे जीवन पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ेगा। यहाँ पहुँचकर मैंने न केवल असाधारण अनुशासन, भाईचारे और मानव सेवा का व्यावहारिक उदाहरण देखा, बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों और राष्ट्रीयताओं से संबंध रखने वाले लोगों को प्रेम, सम्मान और भाईचारे के रिश्ते में बँधा हुआ पाया और हमारी बहुत सच्चे मन से मेहमाननवाज़ी की गई, जो हमेशा हमारी यादों का हिस्सा रहेगी। कहते हैं कि मुझे यहाँ बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला, लेकिन सबसे यादगार क्षण जमाअत के इमाम से मुलाकात थी और उनके भाषण थे, जिन्हें सुनकर मैंने बहुत सबक सीखा और जमाअत अहमदिया की वैश्विक प्रगति के बारे में रिपोर्ट भी सुनी। यह भी बहुत हैरान करने वाली थी। कहते हैं, आपका नारा Love for all, Hatred for none केवल एक नारा नहीं बल्कि जमाअत अहमदिया की व्यावहारिक पहचान है। यदि दुनिया इस प्रेम, सहनशीलता और मानव सम्मान की भावना को अपना ले तो निस्संदेह दुनिया शांति का गहवारा बन सकती है। फिर वे कहते हैं कि लाइव कार्यक्रम जो दुनिया की विभिन्न भाषाओं में प्रसारित हो रहे थे, उन्होंने भी मुझे बहुत हैरान किया।

इसी तरह उनकी जो राजकुमारी थीं, उनकी पत्नी ने भी इन्हीं भावनाओं का व्यक्त किया है। और कहती हैं कि मुझे सबसे अधिक सुखद आश्चर्य महिलाओं के लिए किए गए आदर्श प्रबंध, उनके सम्मान, स्वतंत्रता और गरिमापूर्ण वातावरण को देखकर हुआ। हज़ारों महिलाओं को बहुत व्यवस्थित ढंग से आते-जाते और पूरी गरिमा के साथ जलसे में शामिल होते देखकर इस्लाम के बारे में मेरी कई धारणाएँ बदल गईं। मैंने महसूस किया कि जमाअत अहमदिया ने इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों को व्यावहारिक रूप में पेश किया।

सेनेगल से एक मेहमान, पूर्व गवर्नर सेंट लुई अल्यून बद्रा साम्ब साहब थे। कहते हैं: जिस चीज़ ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह इसका बेहतरीन प्रबंध था। शामिल होने वालों की बहुत बड़ी संख्या के बावजूद यह स्पष्ट महसूस होता था कि जलसे का प्रबंध बहुत अच्छे ढंग से किया गया था। आने-जाने की व्यवस्था भी अच्छी थी। स्वयंसेवक ख़ुशमिज़ाज थे। हर समय उपलब्ध रहते थे। और कहते हैं, मैंने सभी भाषणों को ध्यान से सुना। अब गैर लोग भी भाषणों में केवल बैठे नहीं रहते बल्कि कहते हैं कि हमने ध्यान से सुना। विभिन्न भाषाओं की व्यवस्था बहुत अच्छी थी, जिसके कारण हम सभी भाषणों और संदेशों को अच्छी तरह समझ सके। कहते हैं कि पूरे जलसे के दौरान जो संदेश बार-बार प्रमुख रूप से सामने आया, वह प्रेम, शांति और भाईचारे का संदेश था।

इसी तरह रादु दूता (Radu Duta) साहब। यह उनका नाम है। और

लक्ज़मबर्ग में वकील हैं, बैरिस्टर हैं। अपने बेटे के साथ पहली बार शामिल हुए थे। कहते हैं कि जलसे के तीन दिन मेरे पूरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिन बन गए हैं। मैंने पहली बार इतना बड़ा, व्यवस्थित और गरिमापूर्ण इस्लामी सम्मेलन देखा है। इतनी बड़ी संख्या के बावजूद पूरा प्रबंध स्वयंसेवकों के माध्यम से बहुत अच्छे ढंग से चल रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे विभिन्न देशों से आए हुए लोग एक ही परिवार के सदस्य हों। हर स्वयंसेवक मुस्कुराते हुए मेहमानों की सेवा में व्यस्त था। ड्यूटी पर मौजूद कार्यकर्ता हर मेहमान के साथ इतने प्रेम और सम्मान तथा ध्यान से पेश आ रहे थे जैसे वह सबसे महत्वपूर्ण और सम्मानित व्यक्ति हो। फिर विश्व बैअत का दृश्य भी मेहमानों को बहुत प्रभावित करता है। कहते हैं, विश्व बैअत का आत्मिक और दिल को प्रभावित करने वाला दृश्य मेरे लिए कभी न भूलने वाला था। जब दुनिया के विभिन्न देशों से आए हुए हज़ारों लोगों को एक ही इमाम के हाथ पर बैअत करते और अत्यंत विनम्रता के साथ ख़ुदा तआला के सामने दुआ करते देखा, तो यह एक ऐसा ईमान बढ़ाने वाला और आध्यात्मिक अनुभव था, जिसने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। फिर यह कहते हैं कि जमाअत के इमाम से भी मेरी मुलाकात हुई और मुझे पहले घबराहट थी, लेकिन उनसे मिलकर मेरी घबराहट दूर हो गई। इसी तरह मेरे दिल में जो बातें और भावनाएँ थीं, जो मैं आपसे पूछना चाहता था, वे बातें मेरे पूछे बिना ही उन्होंने मुझसे पूछ भी लीं और बता भी दीं।

फिर एक नव-मुबाए इलाइजह गैबूरियल (Elijah Gabourel) साहब हैं। कहते हैं: इस्लाम स्वीकार करने से पहले मेरा संबंध ईसाई धर्म से था। हमें हमेशा सिखाया जाता था कि ईमान का संबंध संगीत से है। यह भी आजकल दुनिया में बहुत प्रचलित हो गया है कि संगीत आवश्यक है। लेकिन मैं कभी भी इस तरह वास्तविक आध्यात्मिक शांति और अल्लाह तआला का निकट अनुभव नहीं कर सका। मुसलमान होने के बाद भी कहते हैं, नमाज़ें मैं पढ़ता था लेकिन कभी रोने और गिड़गिड़ाने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती थी। लेकिन जब जलसा सालाना में बैअत में शामिल होने का अवसर मिला तो मुझ पर ऐसी आध्यात्मिक स्थिति छा गई, जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। लगातार अपने गुनाहों पर शर्मिंदा होकर इस्तिग़फ़ार करता रहा। दुआएँ माँगता रहा और मेरी आँखों से बिना किसी प्रयास के आँसू जारी रहे। और मेरा ख़िलाफ़त से एक आध्यात्मिक संबंध स्थापित हो गया। अल्लाह तआला से एक आध्यात्मिक संबंध स्थापित हो गया। इसके बाद कहते हैं, नमाज़ हुई। नमाज़ में भी यह आध्यात्मिक स्थिति मुझ पर बनी रही और इसी हालत में मैं जलसा स्थल से बाहर चला गया और मुझे यह एहसास ही नहीं रहा कि मैं अपने जूते पहनना भूल गया हूँ। इसी हालत में मैं स्नानघर चला गया और वहाँ खड़े एक स्वयंसेवक ने मेरे पैरों को देखा, फिर अपनी जूती उतारकर मुझे दे दी और कहा कि आप यह पहन लें। आपको नंगे पैर अंदर जाते हुए तकलीफ़ होगी। तो कहते हैं कि इस छोटी-सी घटना ने मेरे ईमान को और मज़बूत कर दिया कि वास्तव में ख़ुदा तआला द्वारा स्थापित यह एक ईश्वरीय जमाअत है, जहाँ हर व्यक्ति अपने भाई की सहायता करने के लिए हर समय तैयार रहता है। अतः

अहमदी स्वयंसेवक भी और कार्यकर्ता भी, जो मेहमानों का इस तरह ध्यान रखते हैं, इससे भी लोगों के ईमान मज़बूत होते हैं।

चेक रिपब्लिक से एक प्रोफेसर यारोस्लाव फ्रैंक (Jaroslav Franc) आए हुए थे। और दूसरे प्रोफेसर मारेक चाइका (Marek Cejka) साहब थे। कहते हैं: हमें जलसा सालाना इतना पसंद आया कि हम अपने भावों को बयान नहीं कर सकते। चेक रिपब्लिक वापस जाकर हम अपने विद्यार्थियों और प्रोफेसरों को यही बता सकते हैं कि आप लोगों को स्वयं यहाँ आकर इस महान समारोह का अनुभव करना होगा, जो आध्यात्मिकता से भरा हुआ और बेहतरीन प्रबंधों से सुसज्जित था। कहते हैं, दुनिया के विभिन्न कोनों से संबंध रखने वाले लोग प्रेम, शांति और भाईचारे की भावना से एक जगह जमा थे। इबादत के बाद लोगों से मिलने का अनुभव मेरे लिए बहुत सुखद और प्रभावित करने वाला था। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि किस तरह एक विश्वास दुनिया भर के लोगों को प्रेम, शांति और एकता के रिश्ते में जोड़ रहा है। कहते हैं

ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भाषण के बाद हमें इस्लाम और तक़्वा की वास्तविक पहचान मिली। हमें इस विषय के बारे में गहरी समझ और ज्ञान प्राप्त हुआ।

और इसी तरह कहते हैं कि एम.टी.ए. के माध्यम से दुनिया में जो कवरेज थी, वह भी हैरान करने वाली थी।

क़ज़ाख़स्तान से साऊले (Saule) साहिबा जलसे में शामिल हुईं। कहती हैं: यह एक ऐसा आध्यात्मिक और यादगार सम्मेलन था, जिसने मेरे दिल पर बहुत सुखद और गहरे प्रभाव छोड़े हैं। कहती हैं: इमाम जमाअत और अन्य वक्ताओं के भाषणों में ईमान, उच्च नैतिकता, शांति, आपसी मेल-जोल, पारिवारिक मूल्यों, युवाओं की तर्बियत और समाज की सेवा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया। कहती हैं: सबसे अधिक मुझे विभिन्न राष्ट्रों के लोगों के बीच भाईचारे के वातावरण ने प्रभावित किया और जो शांति और सुरक्षा की बातें कर रहे थे।

फिर अमेरिका से डॉक्टर प्रोफेसर ब्रेट शार्फ्स (Brett Scharffs), जो कानून के प्रोफेसर हैं, ये भी आए हुए थे। कहते हैं:

मुझे दुनिया भर में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और कन्वेंशनों में शामिल होने का अवसर मिला है, लेकिन जलसा सालाना यू.के. का अनुभव उन सभी से अलग रहा है। सौ (100) से अधिक देशों से आए हुए लोगों, विभिन्न धर्मों, राष्ट्रीयताओं और जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों से संबंध रखने वाले मेहमानों से मुलाकात हुई। उन सभी की एक ही राय थी कि यहाँ प्रेम, सम्मान, शांति और आपसी भाईचारे का जो वातावरण देखने को मिला, वह वास्तव में असाधारण है।

इसी तरह कहते हैं: ह्यूमैनिटी फर्स्ट और विभिन्न वैज्ञानिक व ऐतिहासिक प्रदर्शनियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह देखकर ख़ुशी हुई कि जमाअत अपने साधनों से दुनिया भर में ज़रूरतमंदों की सेवा कर रही है, चाहे उनका संबंध किसी भी धर्म या राष्ट्र से हो। और फिर कहते हैं: पढ़े-लिखे लोग, उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टर, इंजीनियर, वकील और अन्य विशेषज्ञ बहुत विनम्रता से स्वयंसेवक के रूप में सेवा कर रहे थे, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया।

ब्राज़ील से टेलीविज़न रिपोर्टर एरिक पोर्तेला (Eric Portella) साहब कहते हैं: मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि मैं इस कार्यक्रम के विशाल स्तर और विस्तार को देखकर हैरान रह गया हूँ। विशेष रूप से लंगरखाने का आकार और वे सभी स्थान जहाँ खाना तैयार किया जाता है। आधुनिक, विशाल, व्यवस्थित और अत्यंत साफ-सुथरे। हर स्वयंसेवक की मेहनत, सफाई और लगन को देखना एक बहुत सुंदर अनुभव है, जो मेरे दिल को शांति और ख़ुशी से भर देता है।

फिलीपींस से प्रोफेसर यूसुफ मोरालेस (Yousuf Morales) अपनी पत्नी के साथ आए थे, वह भी प्रोफेसर हैं। प्रोफेसर शरीमा मोरालेस (Sherima Morales)। कहते हैं: उन्होंने ईसाई धर्म से इस्लाम स्वीकार किया है और नेशनल कमीशन ऑफ मुस्लिम फिलिपीनोज़ के चेयरमैन भी रह चुके हैं। अभी अहमदी नहीं हैं। कहते हैं: यद्यपि औपचारिक रूप से उपस्थित लोगों की संख्या लगभग पचास हज़ार बताई गई, लेकिन जलसा स्थल की विशालता और प्रबंधों के स्तर को देखकर मुझे महसूस हुआ कि यह सम्मेलन इससे कहीं बड़ा है। विशेष रूप से उन हज़ारों स्वयंसेवकों के प्रयासों पर हैरानी हुई, जो अपना समय और सेवा देकर एक पूरा अस्थायी शहर बसा देते हैं, जिसमें दसियों हज़ार लोगों के लिए रहने, खाने, यातायात, सफाई और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आर्थिक रूप से सुखी होने के बावजूद स्वयंसेवक सेवा करते हैं और बहुत साधारण तथा शारीरिक मेहनत वाला काम करते हैं और बड़ी विनम्रता से करते हैं और यही बातें हैं जो एक शांतिपूर्ण और आपसी मेल-जोल वाला समाज बना सकती हैं। छोटे बच्चों को पानी पिलाते देखा। इसी तरह कहते हैं कि चौदह-पंद्रह साल के दो बच्चे थे, खाने पर उनकी ड्यूटी थी और इतनी ज़िम्मेदारी से वे दौड़-दौड़कर तीन सौ आदमियों को खाना खिला रहे थे कि हैरानी होती थी। कहते हैं, यहाँ आकर मुझे यह भी पता चला कि सर मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब अहमदी थे। इसी तरह डॉक्टर अब्दुस्सलाम साहब के कारनामों के बारे में और अधिक पता चला। इसी तरह

इमाम जमाअत के भाषणों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। थोड़े समय में उन्होंने

बहुत से विषयों को शामिल किया। और हर विषय को विस्तार से, लेकिन सरल और समझ में आने वाले ढंग से पेश किया।

एल साल्वाडोर से एक मेहमान साऊल इदगार्दो (Saul Edgardo), जो सेंट्रल अमेरिकन पार्लियामेंट में एल साल्वाडोर के प्रतिनिधि हैं, वे भी आए हुए थे। कहते हैं: यह मेरा पहला जलसा सालाना यू.के. था, जिसमें मुझे अहमदिया मुस्लिम जमाअत को बहुत करीब से देखने का अवसर मिला। सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैंने सीखी, वह यह है कि हमें रोज़मर्रा की ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी चाहिए। इसका केंद्रीय संदेश यह था कि जिस तरह एक शाखा पेड़ से अलग होकर सूख जाती है क्योंकि पेड़ ही उसे जीवन दे रहा था, उसी तरह यदि हम भी ख़ुदा तआला से दूर हो जाएँ तो यह हमारी आध्यात्मिक मृत्यु है। ख़लीफ़ा, इमाम जमाअत ने जो यह कहा कि हम ख़ुदा को केवल उस समय तलाश करते हैं जब हम किसी कठिनाई में होते हैं, यह बात भी बिल्कुल सच है। इसी तरह उन्होंने पति-पत्नी के संबंध के बारे में जो नसीहतें कीं, यदि हम उन पर अमल करें और निगाहें नीची रखने से काम लें तो विवाहित जीवन की बहुत-सी समस्याओं से बच सकते हैं। अतः

यदि गैर-अहमदी इस संदेश को समझ सकते हैं तो अहमदियों को कितने अधिक रूप में इस संदेश को समझने की आवश्यकता है।

फिर कहते हैं कि मुझे असाधारण प्रबंधों ने प्रभावित किया। इमाम जमाअत से मुलाकात के लिए बहुत थोड़ा समय था और मेरी इच्छा थी कि अधिक समय मिलता, लेकिन इस थोड़े समय में भी उन्होंने हर चीज़ को देखा और मुझसे बातें कीं। और कहते हैं

मुलाकात के बाद मुझे तो यक़ीन हो गया है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को अपनी जमाअत के बारे में बहुत जानकारी होती है कि वह कहाँ-कहाँ और किस स्थान पर खड़ी है। उन्हें इन बातों से गहरी रुचि थी।

बेलीज़ से एक नव-मुबाइआ मोज़ीक मरियानो (Mosique Mariano) साहिबा कहती हैं: हमारा संबंध एक बहुत ही छोटे देश से है। हमारे शहर की आबादी केवल पचास हज़ार है। केवल सौ आदमी भी इकट्ठे हो जाएँ तो झगड़े शुरू हो जाते हैं, लेकिन जलसे के प्रबंध में असाधारण शांति थी और लोग बहुत अच्छी तरह एक-दूसरे से मिल रहे थे। कहती हैं, मेरे लिए अपने भावों को शब्दों में बयान करना संभव नहीं। मैं अपने आपको एक अहमदी मुसलमान कहने में अब ख़ुशी महसूस करती हूँ। कहती हैं, मेरे पति को पिछले साल जलसा सालाना में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली थी और उस समय ख़लीफ़ा-ए-वक़्त ने कहा था कि अपनी पत्नी को भी अहमदियत का संदेश पहुँचाओ और अल्लाह के फ़ज़्ल से मैं आज पूरे विश्वास और गर्व के साथ कहती हूँ कि मैं अहमदी मुसलमान हूँ।

बुल्गारिया से सिविलेन पेनकोव (Svilen Penkov), जो मिनिस्ट्री ऑफ लेबर एंड सोशल पॉलिसी के सेक्रेटरी जनरल हैं। कहते हैं कि जर्मनी के विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले जलसा सालाना में कई बार शामिल हो चुका हूँ, लेकिन ब्रिटेन के जलसा सालाना का अनुभव अपनी विशालता, संगठन और उच्च स्तर के लिहाज़ से अनोखा और बेमिसाल रहा। जिस चीज़ ने मुझे प्रभावित किया, वह जलसा स्थल की असाधारण विशालता और वहाँ बनाया गया अस्थायी शहर था। सभी मूलभूत सुविधाएँ बहुत अच्छे ढंग से उपलब्ध कराई गई थीं और पचास हज़ार से अधिक संख्या में लोग वहाँ जमा थे। जलसे में होने वाले भाषण बहुत जानकारीपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण और उच्च स्तर के थे। वक्ताओं ने धार्मिक और वैज्ञानिक विषयों को बहुत अच्छे ढंग से पेश किया, जिससे उपस्थित लोगों के ज्ञान और समझ में वृद्धि हुई। विभिन्न प्रदर्शनियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया और उन्हें आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार बहुत पेशेवर ढंग से व्यवस्थित किया गया था। बच्चों के लिए भी वहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रदर्शनियाँ थीं। ये चीज़ें अगली पीढ़ी की तर्बियत के लिए अच्छी हैं।

सेनेगल से अहमदूबाह साहब तिजानिया संप्रदाय से संबंध रखने वाले अपने क्षेत्र के धार्मिक नेता हैं। कहते हैं कि इस जलसे का शानदार संगठन और प्रबंध मुझे बहुत प्रभावित कर गया है। जिस ढंग से यह जलसा आयोजित हुआ, सुरक्षा के बेहतरीन प्रबंध, उपस्थित लोगों के उच्च नैतिक गुण, उनकी समझदारी, ख़ुशमिज़ाजी, विशेष रूप से जमाअत अहमदिया के लोगों के ऊँचे चरित्र ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। कहते हैं, पहले जमाअत अहमदिया के बारे में केवल सुना करता था, लेकिन आज अपनी आँखों से एक ऐसी जमाअत को देखकर बहुत ख़ुशी हुई जो बहुत व्यवस्थित, बहुत सच्चे मन वाली और अपने ख़लीफ़ा के निर्देशों पर पूरी तरह अमल करने वाली है। कहते हैं, यह तो मुझे पहले मालूम था कि आप लोग मानवता की सेवा के लिए बहुत कुछ करते हैं, जैसे दान हैं, पानी के कुएँ हैं, मस्जिदें हैं, अस्पताल हैं, राहत की गतिविधियाँ हैं और अन्य कल्याणकारी योजनाएँ हैं, लेकिन आज मैंने आपकी मानवीय क़द्रों, मानव विकास के लिए प्रयासों, समझदारी, बुनियादी शिक्षा के प्रसार और शैक्षणिक संस्थानों को प्रदर्शनियों में देखकर और अधिक प्रभावित हुआ हूँ। वास्तव में मैं आपको दिल की गहराइयों से श्रद्धांजलि पेश करता हूँ। और कहते हैं कि इमाम जमाअत से मेरी मुलाकात हुई, इससे भी मुझे जमाअत को समझने का बहुत अवसर मिला।

इसी तरह सेनेगल से मोरमान काबा जाकाते साहब संसद के सदस्य हैं। कहते हैं: मैंने अपनी आँखों से देखा कि जनता की सेवा, सम्मान, हौसला और दृढ़ निश्चय आपकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

शब्दों से बढ़कर मैंने यहाँ सेवा वाला इस्लाम देखा। ऐसे हाथ देखे जो देते हैं, ऐसे दिल देखे जो माफ़ करते हैं और ऐसे दरवाज़े देखे जो हमेशा दूसरों के लिए खुले रहते हैं।

कोसोवो से प्रोफेसर डॉक्टर हलील इब्राहिमी (Halil Ibrahimi) साहब एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् हैं। वे शोधकर्ता हैं और विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं और अपनी शैक्षणिक कोशिशों और शोध गतिविधियों के कारण कोसोवो में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। कहते हैं: हर विभाग में अनुशासन, सहयोग और त्याग की जो व्यावहारिक तस्वीर देखने को मिली, वह वास्तव में ईर्ष्या के योग्य थी। इसके साथ-साथ हर उस व्यक्ति की ओर से मिलने वाला प्रेम, सच्चाई, सम्मान और उदार मेहमाननवाज़ी ने इस अनुभव को मेरे लिए कभी न भूलने वाला बना दिया। कहते हैं, इन दिनों के दौरान विभिन्न भाषण सुनने और विशेष रूप से इमाम जमाअत का भाषण सुनने का अवसर मिला। उनसे मुलाकात भी हुई। जिस चीज़ ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह शांति, विभिन्न धर्मों के बीच मेल-जोल, मानव समानता, आपसी सम्मान और समाज के हर व्यक्ति को साथ लेकर चलने की सोच पर लगातार और असाधारण ज़ोर था। आज के दौर में जब दुनिया के कई हिस्सों में धार्मिक गलतफहमियाँ, उग्रवाद और असहिष्णुता एक गंभीर चुनौती बन चुके हैं, वहाँ ये संदेश बहुत समयानुकूल, आशा देने वाले और मानवता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने वाले महसूस होते हैं।

स्पेन से हुआन एंतोनियो रेयेस (Juan Antonio Reyes), जो पेद्रोआबाद के मेयर हैं। कहते हैं: जलसा सालाना ने हमें यह देखने का अवसर दिया है कि यह सम्मेलन केवल विश्वास का उत्सव नहीं, बल्कि विभिन्न देशों, संस्कृतियों और वास्तविकताओं से संबंध रखने वाले लोगों के बीच साथ रहने का एक असाधारण उदाहरण है, जो शांति, सम्मान और भाईचारे के साझा मूल्यों के अंतर्गत एकजुट है। कहते हैं, विभिन्न प्रदर्शनियों और जानकारीपूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से जमाअत अहमदिया मुस्लिम की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में की जाने वाली सेवाओं के बारे में भी मुझे जानकारी हुई।

ऑस्ट्रिया से दो मेहमान वकील कैरोलिन (Kerolin) साहिबा और हाना (Hanna) साहिबा शामिल हुईं। कहती हैं कि जलसा सालाना में शामिल होने को हम अपनी ख़ुशकिस्मती मानती हैं। प्रबंधों को देखकर हैरान हुए। हर ओर शांति का वातावरण था। कहती हैं, मैंने जलसा स्थल में भी और बाहर हर तरफ घूमकर जायज़ा लिया। न कोई लड़ाई थी, न कोई शोर था। इतने शांत और शांतिपूर्ण लोग दुनिया में नहीं हैं। हर कोई एक-दूसरे की सहायता के लिए तैयार था। बच्चों को पानी पिलाते देखकर ख़ुशी हुई। और मानवाधिकार की बैठक में शामिल हुई। समुदाय का पूरी दुनिया में शांति फैलाने का विचार और अधिकार स्थापित करने का विचार रखना, केवल अहमदियों के लिए नहीं बल्कि हर मज़लूम के लिए आवाज़ उठाना, यह बड़ी बात है, जिससे मैं बहुत प्रभावित हुई। वह तो इतनी अधिक प्रभावित हुई हैं कि अपने मुबल्लिग़ से वादा लेकर गई हैं कि अगले साल भी यहाँ लेकर आना।

बोलीविया से पत्रकार गाइडर गिलेन (Guider Guillen) जलसे में आए थे। कहते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिम के जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए एक शानदार अनुभव था। इसी तरह मैं भाषणों से बहुत प्रभावित हुआ। इमाम जमाअत के भाषण से प्रभावित हुआ। और कहते हैं कि यह ऐसा जलसा था जो हमेशा के लिए हमारी ज़िंदगियों में अंकित हो जाएगा और हमें अपने रब के करीब होने और उसकी रहमत प्राप्त करने का रास्ता दिखाएगा। अल्लाह तआला करे कि इस्लाम के संदेश को भी स्वीकार करने वाले बन जाएँ। कहते हैं, व्यक्तिगत रूप से यह देखने का अवसर मिला कि वर्षों से गलत रूप से जो यह

प्रचार करने की कोशिश की जा रही है कि मुस्लिम महिला मज़लूम है और दबाव में है, वह बिल्कुल झूठ है। इसके विपरीत इस्लाम में महिला को जो सम्मान, सुरक्षा और महत्व दिया जाता है, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

कोसोवो से अवनी जाशरी (Avni Jashari) साहब, जो नगरपालिका लिपजान के चीफ़ ऑफ़ कैबिनेट हैं, कहते हैं कि इमाम जमाअत का भाषण सुनने का अवसर मिला और जलसे के शुरू होने से पहले गुरुवार की रात स्वयंसेवकों को नसीहत की थी कि मेहमानों की सेवा को एक बड़ी ज़िम्मेदारी समझते हुए प्रेम, विनम्रता, सच्चाई और अच्छे आचरण के साथ पूरा करें। कहते हैं, उस समय मुझे यह नसीहत अच्छी लगी थी, लेकिन मुझे अंदाज़ा नहीं था कि अगले ही दिन इसका व्यावहारिक नमूना अपनी आँखों से देखूँगा। कहते हैं, मेरी तबीयत अचानक खराब हो गई। चक्कर आने शुरू हो गए, तबीयत खराब हो गई, उल्टी आने लगी। तुरंत प्राथमिक चिकित्सा वालों ने मुझे देखा। छह डॉक्टर मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए। ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं अपने घर में हूँ। तो उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि ख़लीफ़तुल मसीह के निर्देश केवल शब्द नहीं थे बल्कि हर स्वयंसेवक के व्यावहारिक जीवन का हिस्सा हैं।

जापान से हिरोयूकी इवामोतो (Hiroyuki Iwamoto) साहब कहते हैं कि हमारे लिए यह बहुत यादगार यात्रा थी। हमने जलसे के वातावरण को प्रेम और आध्यात्मिकता से भरपूर महसूस किया। सेवा करने वाले कार्यकर्ताओं की भावना, पानी पिलाने वाले बच्चों की सेवा का ढंग और ख़िलाफ़त के साथ जमाअत का संबंध और आपको देखने की तड़प, यह बहुत शानदार अनुभव था।

एक और दोस्त लेबनान से हैं और बेल्जियम

के निवासी हैं। कहते हैं: मैं चूँकि डिप्लोमैटिक कोर में काम करता हूँ और दुनिया में विभिन्न स्थानों पर जहाँ बड़ी-बड़ी बैठकें होती हैं, जाता हूँ, चाहे वह क़तर हो, ब्रसेल्स हो और दूसरी बड़ी-बड़ी जगहें हों, लेकिन मैंने कहीं भी इस जलसे की तरह इतना बड़ा, शानदार और व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं देखा। पचास हज़ार से अधिक लोग हैं, कोई किसी को धक्का नहीं मार रहा, कोई बुरा-भला नहीं कह रहा। हर कोई सम्मान और प्रेम से मिल रहा है और इस्लाम की जो भाईचारे की शिक्षा है, मैंने उसे यहाँ व्यावहारिक रूप से देखा है। इसी तरह क़ुरआन की जो शिक्षा है कि لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अल-बक़रा: 257)। वह मुझे यहाँ जलसे में व्यावहारिक रूप से दिखाई दी है कि यहाँ दूसरे धर्मों के लोग भी आ रहे हैं, यहाँ रह रहे हैं, उनका भी आदर और सम्मान किया जा रहा है और खुशी से स्वतंत्र रूप से घूम रहे हैं।

अर्जेंटीना से "सर्जियो रूबिन" (Sergio Rubin) ने भी यहाँ शामिल होकर जलसे में शिरकत की। वे देश के सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समाचार पत्र क्लेरिन (Clarin) में धार्मिक मामलों के मुख्य संपादक हैं। कहते हैं: जब आने से पहले मैंने अपने समाचार पत्र को इस जलसे में शामिल होने के बारे में बताया तो मेरे बहुत-से साथियों (colleagues) ने इस्लाम के खिलाफ जो सामान्य पूर्वाग्रह हैं, उनकी वजह से मुझे सलाह दी कि अपने फैसले पर दोबारा विचार कर लो। बहरहाल, जब मैंने जलसे के वातावरण को प्रत्यक्ष रूप से देखा तो पता चला कि इस्लाम के एक शांतिपूर्ण धर्म होने का सबसे अच्छा प्रमाण आपकी जमाअत स्वयं है और आपके जलसे का यह शांतिपूर्ण वातावरण है। इतनी बड़ी और विशाल भीड़ के बावजूद हर तरफ शांति और सुरक्षा का वातावरण था। कहते हैं कि जलसे के आखिरी दिन उन्होंने टीवी चैनल टी.एन. पर जलसे की लाइव प्रसारण दिखाया ताकि दर्शकों को भी यह वातावरण दिखाया जाए और इस बात पर भी ज़ोर दिया कि इस्लाम शांति और सुरक्षा का धर्म है और जमाअत को इसके प्रमाण के रूप में पेश किया। वे स्वयं कैथोलिक हैं। कहते हैं, आपके ख़लीफ़ा का जलसे का उद्घाटन भाषण मुझे पसंद आया, जिसमें उन्होंने तक़्वा की बात की, जो हर धर्म का मूल है। और कहते हैं कि एक ईसाई होने के नाते मुझे इस पहलू से अपने ज्ञान और समझ में बहुत वृद्धि करने का अवसर मिला।

लिथुआनिया से स्वेतलाना मार्केविचिएने (Mrs. Svetlana Markeviciene) साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना के अवसर पर मुसलमानों के बीच रहकर उनके तौर-तरीकों को करीब से देखने का अवसर मिला। बहुत कुछ नया सीखा। इमाम जमाअत का महिलाओं से संबोधन सुनकर इस्लाम में महिला के स्थान के बारे में मेरी बहुत-सी गलतफहमियाँ दूर हुईं। यह जानकर खुशी हुई कि इस्लाम महिला को सम्मान, सुरक्षा और उसके बुनियादी अधिकारों की शिक्षा देता है। भाषण बहुत संतुलित, तर्कपूर्ण और दिल को छू लेने वाला था, जिसने मुझे इस्लाम के बारे में और अधिक सकारात्मक ढंग से सोचने का अवसर दिया।

स्विट्ज़रलैंड से संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार सलाहकार जूलिया प्रातिसी (Giulia Pratesi) कहती हैं: मेरे लिए यह एक अनोखा अनुभव था और सम्मेलन में शामिल होने के माध्यम से मुझे एक ऐसी धार्मिक बिरादरी को करीब से देखने और समझने का अवसर मिला, जिसके बारे में पहले मेरी जानकारी सीमित थी। स्वयंसेवकों और शामिल होने वालों की मेहमाननवाज़ी, खुशमिज़ाजी और सहयोग ने मुझे बहुत प्रभावित किया। हर व्यक्ति बहुत मुस्कुराकर मिलता। मेरे सवालों के जवाब देता और हमेशा इस बात के लिए तैयार रहता कि हमारे सवालों का जवाब दे, जिसकी वजह से मुझे जमाअत अहमदिया मुस्लिम की इतिहास, परंपराओं और बुनियादी मूल्यों को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिला। उन्होंने विभिन्न प्रदर्शनियों की भी प्रशंसा की है कि बहुत दिलचस्प प्रदर्शनियाँ थीं, जिनमें इतिहास, मानवता की सेवा की योजनाओं और हर क्षेत्र में इसकी सेवाओं को प्रभावी ढंग से पेश किया गया था। महिलाओं की भूमिका से संबंधित प्रदर्शनी मेरे लिए विशेष रूप से जानकारी बढ़ाने वाली साबित हुई, क्योंकि उसने इस विषय को जमाअत के अपने दृष्टिकोण से समझने का अवसर दिया।

ट्यूरिन, इटली से प्रोफेसर फेदेरिका सोना (Federica Sona) साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना में उन्हें दूरदर्शिता और आध्यात्मिकता का एक सुंदर मेल दिखाई दिया। तर्क के दृष्टिकोण से देखें तो हैरान करने वाली बात यह थी कि पूरा प्रबंध कितनी सहजता से चल रहा था, जैसे हवा अपने साथ लिए जा रही हो। छोटे से छोटे स्वयंसेवक से लेकर, जो पानी पिलाने की ड्यूटी पर था, बड़ी उम्र के कार्यकर्ताओं तक सभी में नेक नीयत, मेहमाननवाज़ी, खुशमिज़ाजी और मुस्कुराहट समान थी। भावनात्मक रूप से मैं कहती हूँ कि ऐसा लग रहा था जैसे एक बड़े अंतरराष्ट्रीय परिवार में स्वागत किया जा रहा हो। ऐसा महसूस हो रहा था कि मेहमान को खुशी से स्वीकार किया जाता है और ध्यान तथा प्रेम से पेश आया जाता है। कहती हैं, मेरी मुलाकात कई पुरुषों, महिलाओं और बच्चों से हुई, जिन्होंने मेरे साथ मुस्कुराहट बाँटी, रास्ता ढूँढ़ने में मदद की या अपने जीवन के अनुभव, कभी दर्दनाक, कभी सुखद और कभी ज्ञान बढ़ाने वाले, बयान किए। विशेष रूप से आध्यात्मिक और बारीक पहलुओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि स्पष्ट सपनों में पहले से मिलने वाली सूचनाओं जैसे घटनाओं को कुछ दोस्तों ने उनके साथ साझा किया, जिससे वे बहुत प्रभावित हुई हैं। कहती हैं कि यह जमाअत एक ऐसा बड़ा और एकजुट परिवार है जो भौगोलिक सीमाओं से परे है।

जीनाप आयदीन (Cenap Aydin) साहब जो

रोम में धर्मों के समाजशास्त्र के विद्वान हैं। कहते हैं: सबसे पहले जो चीज़ दिखाई देती है, वह यह है कि इतनी अधिक राष्ट्रीयताएँ, भाषाएँ और संस्कृतियाँ एक ही जगह जमा हैं। विभिन्न देशों के झंडों को जमाअत के झंडे के साथ लहराने का समारोह इस अंतरराष्ट्रीय एकता को प्रमुख रूप से दिखाता है। यानी एक ऐसी छोटी-सी दुनिया जहाँ विभिन्न राष्ट्र अपनी अलग पहचान समाप्त किए बिना एक साथ रहते हैं। कहते हैं, धर्मों के समाजशास्त्र के विद्यार्थी के रूप में यह देखने का अवसर मिला कि एक धार्मिक जमाअत किस तरह स्थानीय पहचान और वैश्विक एकता को एक साथ लेकर चल सकती है। इसी तरह उन्होंने मेहमाननवाज़ी की भी बहुत प्रशंसा की। कार्यकर्ताओं की भी बहुत प्रशंसा की।

कनाडा की स्टोनी नाकोडा (Stoney Nakoda) फर्स्ट नेशन से हैं। उनका नाम रेव. टोनी स्नो (Rev. Tony Snow) साहब है। कहते हैं: इतने बड़े और विशाल सम्मेलन को देखना मेरे लिए बहुत दिलचस्प था। यहाँ बेहतरीन प्रबंध किए गए थे और हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार कामों को चलाने के लिए भरपूर प्रयास कर रहा था। और कहते हैं, यह काम आसान नहीं होता, लेकिन जिस भावना के साथ यह काम हो रहा था, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

तुर्की से गैर-जमाअत मेहमान प्रोफेसर मतीन बोज़ान (Metin Bozan) साहब, जो दिजला यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं। वे इस्लाम के धर्मों के इतिहास विभाग के अध्यक्ष हैं। अपनी निगरानी में जमाअत के बारे में विद्यार्थियों से शोध-प्रबंध भी लिखवा चुके हैं। कहते हैं कि जलसे के हर प्रबंध और हर काम में पूरा अनुशासन दिखाई दिया और यह आगे कहते हैं कि हमारा तो यह सैद्धांतिक विचार है कि जो व्यक्ति भी अल्लाह, रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आख़िरत जैसी ईमान की शर्तों और इस्लाम की शर्तों को मानता है, हम उसे मुसलमान

समझते हैं और उसकी तकफ़ीर करना जायज़ नहीं समझते। इसलिए हमारी नज़र में अहमदी भी मुसलमान हैं।

काश कि पाकिस्तानी उलेमा को भी यह बात समझ आ जाए।

फिर कहा कि जमाअत की अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए कोशिशों को मैं बहुत सराहता हूँ। इसी तरह उन्होंने हर अवसर पर पुरुषों और महिलाओं के अलग-अलग प्रबंध देखे और यह निष्कर्ष निकाला कि जमाअत में इस्लामी पर्दे की शिक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है।

फ्रांस से थियरी वाले (Thierry Valle) साहब, जो Coordination of Associations and Individuals for Freedom of Conscience के अध्यक्ष हैं, कहते हैं कि बेदाग प्रबंध थे। शांतिपूर्ण वातावरण था। बहुत सुकून था। इमाम जमाअत का समापन भाषण वास्तव में एक महान मार्गदर्शक और दिल को प्रभावित करने वाला था। उसने हमें उन उच्च मानकों की याद दिलाई, जिन्हें हमें अपने लिए निर्धारित करना चाहिए और उस शांतिपूर्ण दुनिया का एहसास कराया, जिसके निर्माण के लिए हम सभी को प्रयास करते रहना चाहिए। फिर कहते हैं कि मैं बहुत धन्यवाद करता हूँ। यहाँ आकर मुझे एहसास हुआ कि जमाअत अहमदिया दुनिया में शांति, प्रेम और भाईचारे का जो संदेश देती है, उसका व्यावहारिक प्रमाण मैंने इस रूप में देखा कि सौ से अधिक देशों के लोग एक गुलदस्ते की तरह एकत्र हैं और उसकी खुशबू मैंने स्वयं महसूस की।

बेल्जियम से एक जनरलिस्ट हैं। वे कहते हैं: मैं पहले भी शामिल हो चुका हूँ, लेकिन इस साल कहते हैं कि मैं इमाम जमाअत के महिलाओं से संबोधन से प्रभावित हुआ, जिसमें महिलाओं को प्रोत्साहित किया गया कि वे न केवल धार्मिक ज्ञान प्राप्त करें बल्कि सांसारिक ज्ञान भी प्राप्त करें और दुनिया के हर क्षेत्र में आगे बढ़ें। इसी तरह

जापान से प्रोफेसर मिने-साकी हिरोको (Minesaki Hiroko) साहिबा हैं। उन्होंने जमाअत अहमदिया पर एक शोध पुस्तक भी लिखी है, जिसके लिए वे रब्वा भी गईं, क़ादियान भी गईं और विभिन्न स्थानों पर भी गईं। उनका ज्ञान बहुत गहरा है। कहती हैं कि जलसे में एक जर्मन युवक मुझे मिला। उसने आज ही बैअत की थी। मैंने उससे पूछा कि तुम्हें किस चीज़ ने बैअत करने की ओर आकर्षित किया है? कहने लगा कि जलसे के वातावरण ने, अहमदियों के भाईचारे और आपसी प्रेम ने मुझे मजबूर किया है। इसी तरह उन्होंने ड्यूटी करने वालों की भी बहुत प्रशंसा की है।

इसी तरह आर्ची साहब, जो इंडोनेशियाई हैं और

यूनान में अपनी यूनानी नव-मुस्लिम गैर-अहमदी पत्नी के साथ रहते हैं। कहते हैं, जब मुझे निमंत्रण मिला तो मैंने सोचा कि यह एक आध्यात्मिक यात्रा है। यह मुझे अल्लाह तआला के करीब लाएगी, इसलिए मैं यूनान छोड़कर यहाँ आ गया और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के भाषणों ने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा। लोगों की सेवाओं ने, कार्यकर्ता जो सेवा कर रहे थे, उसने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

लातविया के मेहमान हैं नारमुंदज़ (Normunds Boluzs)। उन्होंने राजनीति विज्ञान में मास्टर किया हुआ है। उनका शोध-प्रबंध था "पाकिस्तान में अहमदियों के खिलाफ़ ज़ुल्म-ज़्यादती और अन्याय"। ये शामिल हुए। कहते हैं: इस्लाम और अहमदियत के बारे में मेरे जो सवाल थे, जलसे के दौरान मुझे अपने सभी सवालों के जवाब मिल गए। फिर यूनान

के प्रतिनिधिमंडल में एक मेहमान महिला थीं। वह कहती हैं कि यह एक सुंदर अनुभव था। स्वयंसेवकों में से हर व्यक्ति मेहमानों के साथ बहुत दोस्ताना और मददगार था। प्रदर्शनियाँ बहुत अच्छी थीं, खास तौर पर 'रिव्यू ऑफ रिलिजन्स' की इस्लाम के इतिहास के बारे में प्रदर्शनी। मैं कई घंटे वहाँ बिताना चाहती थी। पुरातत्व के बारे में सारी प्रशंसा करने के बाद वह कहती हैं कि एक बात ऐसी है जो मुझे पसंद नहीं आई और वह यह कि कुछ महिलाएँ इस्लामिक ड्रेस कोड यानी पर्दे की अच्छी तरह पालन नहीं कर रही थीं और कुछ पुरुष भी नज़रें नीची रखने में कमजोरी दिखा रहे थे, जबकि मैंने इस बारे में विशेष रूप से नसीहत की थी। इसलिए नकारात्मक टिप्पणी को भी हमें अपनी सुधार के लिए सोचना चाहिए और सुनना चाहिए।

इसलिए जो लोग लापरवाही करते रहे हैं उन्हें याद रखना चाहिए कि गैर लोग हमें बहुत गहरी नज़र से देखते हैं और हमें उन्हें कोई ऐसा अवसर नहीं देना चाहिए जिससे इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पर दाग लगे।

बल्कि जलसे की तकरीरों के दौरान मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण भी पढ़ा था कि गैरों को ऐसा अवसर न दो कि वे हम पर उंगली उठाएँ।

(माख़ूज़ अज़ मल्फ़ूज़ात जिल्द 3, पृष्ठ 143, एडिशन 2022)

पोलैंड से 'वोइचेक लमेंटोविच' (Wojciech Lamentowicz), इनके नाम ज़रा मुश्किल होते हैं। बहरहाल, यह मानव अधिकारों के प्रोफेसर हैं और यह यूनिवर्सिटी के चांसलर भी रह चुके हैं। कानून पढ़ाते हैं। कहते हैं: व्यवस्थाएँ देखकर बहुत प्रभावित हुआ और इमाम जमाअत से जो मेरी मुलाकात हुई है, उसके प्रभाव और भावनाओं को बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। व्यक्तिगत रूप से मुझसे कहते हैं कि उनसे बातें कीं तो बहुत प्रभावित हुआ। कहते हैं कि जो कुछ मैंने यहाँ सीखा है, अब वह मैं अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाऊँगा ताकि उन्हें इस्लामी शिक्षाओं के वास्तविक अर्थ मालूम हों।

कुछ घटनाएँ जो मैंने ली थीं, उनमें से भी ये कुछ घटनाएँ बयान की हैं।

प्रेस एंड मीडिया के बारे में इन दिनों, जैसा कि मैंने कहा, प्रेस सेक्शन की ओर से भी और यूके के प्रेस की ओर से भी काफी कवरेज मिली है और ब्रिटेन के जो प्रतिष्ठित अख़बार 'द टाइम्स' है, उसने अपने प्रिंट और ऑनलाइन संस्करण में खबर प्रकाशित की थी। और दूसरे प्रेस की ओर से भी। मीडिया कवरेज में प्रिंट आर्टिकल्स की संख्या सोलह (16) है। पाठकों की संख्या एक करोड़ है। रेडियो कार्यक्रम पैंतीस (35) हुए। पिछले साल की तुलना में दस की वृद्धि है। टीवी कार्यक्रम छह हुए, जिन्हें देखने वालों का अनुमान बहत्तर लाख है। सोशल मीडिया पर पाँच लाख तीस हजार views हुए और यूके सेक्शन की एक रिपोर्ट में यह करोड़ों में भी है।

प्रेस एंड मीडिया के माध्यम से कुल कवरेज

पाँच करोड़ अट्ठाईस लाख लोगों तक हुई है।

और कोई बारह अलग-अलग अख़बारों और टेलीविजन चैनलों ने कवरेज की। इसमें प्रसिद्ध राष्ट्रीय चैनल और अख़बार शामिल थे।

पत्रकारों के विचार एक महिला पत्रकार आख़िरी दिन बैअत देखने के बाद कहती हैं कि मैं बहुत प्रभावित हूँ। भावनाओं से मेरी आँखें भर आई हैं। यह ऐसा दृश्य था जो मैंने दुनिया में कभी नहीं देखा और मुझे नहीं लगता कि दुनिया में कोई और कभी ऐसा अनुभव और ऐसा समारोह आयोजित कर सकता है। यह दृश्य साँसें रोक देने वाला था और मैं पूरी तरह इसके प्रभाव में हूँ। इसी तरह के विचार और भी लोगों के हैं।

एम.टी.ए अफ्रीका की ओर से भी बड़ा काम हो रहा है। बीस पत्रकार यहाँ शामिल हुए थे। उन्होंने एक सौ सत्तावन रिपोर्टें भेजीं। छह करोड़ तीस लाख से अधिक घरों तक जलसे की खबर पहुँची।

जलसा सालाना की अफ्रीका के अठारह से अधिक चैनलों पर सीधे खबर प्रसारित हुई। तकरीरें प्रसारित हुईं और प्रसारण की पहुँच का अनुमान तीन करोड़ पचास लाख से अधिक लोगों तक है।

अफ्रीका में गैर-अहमदी दर्शकों के विचार ये थे।

सिएरा लियोन के गाँव टेंटा फोर से पादरी जॉर्ज कहते हैं कि पेशे के लिहाज़ से मैं शिक्षक हूँ और सिएरा लियोन के गाँव टेंटा फोर में रहता हूँ। मैं अहमदी मुसलमान नहीं हूँ। जलसा सालाना ब्रिटेन के तीनों दिनों के दौरान जिस बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह अहमदी मुसलमानों की खिलाफत से गहरी मोहब्बत और पूरी मानव जाति के लिए उनकी ओर से शांति, प्रेम, वफादारी और सम्मान का प्रदर्शन था, चाहे उनका संबंध किसी भी देश या क्षेत्र से हो। कहते हैं कि मुझे रविवार को चर्च जाना था, लेकिन मैंने मस्जिद जाकर वैश्विक बैअत देखने का फैसला किया और वहाँ जो कुछ मैंने देखा, वह मेरे विचार से बिल्कुल अलग था। अब मैं समझ गया हूँ कि जमाअत अहमदिया मुस्लिम जमाअत पूरी दुनिया में इतनी तेजी से क्यों फैल रही है।

इसी तरह और भी बहुत सारे पादरी हैं, और पढ़े-लिखे लोग हैं। उन्होंने अपने विचार भी भेजे हैं।

अल्लाह तआला इस जलसे के जहाँ अच्छे प्रभाव पूरी जमाअत के लोगों पर कायम रखे, वहाँ लोगों का भी मार्गदर्शन करे और उन्हें सही इस्लाम और अहमदियत की ओर आकर्षित करे।

पृष्ठ 10 का शेष चूंकि मदीना का एक ओर का पर्याप्त भाग ख़न्दक़ से सुरक्षित था और दूसरी ओर कुछ पर्वतीय टीले, पक्के मकान तथा कुछ बाग़ आदि थे, इसलिए सेना तुरन्त आक्रमण नहीं कर सकती थी। अतः उन्होंने परामर्श करके यह उपाय किया कि किसी प्रकार यहूद का तीसरा क़बीला जो अभी मदीना में शेष था, जिसका नाम बनू क़ुरैज़ा था अपने साथ मिला लिया जाए और इस के द्वारा मदीना तक पहुँचने का मार्ग खुल जाए। अतः परामर्श के पश्चात् हुय्यि इब्ने अख़तब को जो बनू नज़ीर का सरदार था जिसको देश से निकाला जा चुका था और जिसके उपद्रव और उत्पात के कारण सम्पूर्ण अरब एकत्र होकर मदीना पर आक्रमणकारी हुआ था, काफ़िरों की सेना के सेनापति अबू सुफ़यान ने इसे इस बात पर नियुक्त किया कि जैसे भी हो बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लो। अतः हुय्यिइब्ने अख़तब यहूदियों के क़िलों की ओर गया। उसने बनू क़ुरैज़ा के सरदारों से मिलना चाहा। पहले तो उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया परन्तु जब उसने उन्हें समझाया कि इस समय सारा अरब मुसलमानों का विनाश करने के लिए आया है तथा यह बस्ती समस्त अरब का मुकाबला किसी भी प्रकार नहीं कर सकती। इस समय जो सेना मुसलमानों के मुकाबले पर खड़ी है उसे सेना नहीं कहना चाहिए अपितु ठाठे मारने वाला समुद्र कहना चाहिए। इस प्रकार अन्ततः उस ने बनू क़ुरैज़ा को ग़द्दारी और संधि भंग करने पर तैयार कर दिया तथा यह निर्णय हुआ कि काफ़िरों की सेना सामने की ओर से ख़न्दक़ पार करने का प्रयास करे और जब वह ख़न्दक पार करने में सफल हो जाएगी तो बनू क़ुरैज़ा की दूसरी ओर से मदीने के उस भाग पर आक्रमण कर देंगे जहाँ स्त्रियाँ और बच्चे हैं जो बनू क़ुरैज़ा पर विश्वास करके असुरक्षित छोड़ दिए गए थे। इस प्रकार मुसलमानों का मुकाबला करने की शक्ति पूर्णतया कुचली जाएगी तथा एक ही बार में मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सब मार दिए जाएँगे। यह निश्चित बात है कि यदि इस योजना में काफ़िरों को कुछ सफलता भी मिल जाती तो मुसलमानों के लिए सुरक्षा का कोई स्थान शेष नहीं रहता था। बनू क़ुरैज़ा मुसलमानों के समझौते के अनुसार मित्र थे और यदि वे इस खुले युद्ध में सम्मिलित न भी होते तब भी मुसलमान यह आशा करते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई आक्रमण नहीं कर सकेगा। यही कारण था कि उनकी ओर का भाग बिल्कुल असुरक्षित छोड़ दिया गया था। बनू क़ुरैज़ा और काफ़िरों ने इस परिस्थिति के उपलक्ष्य यह निर्णय कर दिया था कि जब बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों के साथ मिल गए तो वे प्रत्यक्ष रूप से काफ़िरों की सहायता न करें, ताकि ऐसा ने हो कि मुसलमान मदीने के इस भाग की सुरक्षा की भी कोई व्यवस्था कर लें जो बनू क़ुरैज़ा के क्षेत्र के साथ लगता था। यह योजना अत्यन्त भयानक थी। मुसलमानों को असावधान रखते हुए बनू क़ुरैज़ा का ऐसी आपात स्थिति में शत्रु के साथ जा मिलना, जबकि शत्रु की सेना का इस्लामी सेना पर भयानक आक्रमण हो रहा हो मदीने की उस ओर की सुरक्षा को जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे बिल्कुल असंभव बना दिया था। मुसलमानों पर दोनों ओर से आक्रमण की संभावना के पश्चात् मक्का की सेना ने ख़न्दक़ पर आक्रमण प्रारम्भ किया। पहले कुछ दिन तो उनकी समझ में न आया कि वे ख़न्दक़ को किस प्रकार पार करें परन्तु दो चार दिन के पश्चात् उन्होंने यह उपाय निकाला कि धनुषधारी ऊँचे स्थानों पर खड़े होकर उन मुसलमान दलों पर वाण बरसाना आरम्भ कर देते थे जो ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए ख़न्दक़ के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठाए गए थे। जब तीरों की बौछार के कारण मुसलमान पीछे हटने पर विवश हो जाते तो उच्च कोटि के घुड़सवार ख़न्दक फांदने का प्रयास करते। विचार किया गया कि इस प्रकार के निरन्तर आक्रमणों के परिणामस्वरूप कोई न कोई ऐसा स्थान निकल आएगा जहाँ से पैदल सेना अधिक संख्या में ख़न्दक़ पार कर सकेगी। ये आक्रमण निरन्तर इतनी अधिकता के साथ किए जाते थे कि कई बार मुसलमानों को सांस लेने का भी अवसर नहीं मिलता था। अतः एक दिन आक्रमण इतना भीषण हो गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, जिसका रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इतना आघात पहुँचा कि आप ने फ़रमाया ख़ुदा काफ़िरों को दण्ड दे, उन्होंने हमारी नमाज़ें नष्ट कीं[1]। यद्यपि मैंने यह वृत्तान्त शत्रुओं के आक्रमणों की भयंकरता प्रकट करने के लिए वर्णन किया है परन्तु इस से मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चरित्र पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है और ज्ञात होता है कि आप के लिए संसार में सर्वप्रिय वस्तु ख़ुदा तआला की उपासना थी। जब कि शत्रु मदीना को चारों ओर से घेरे हुआ था, जब कि मदीना के पुरुष तो पृथक रहे स्त्रियों और बच्चों के प्राण भी ख़तरे में थे। जब हर समय मदीने के लोगों का हृदय धड़क रहा था कि शत्रु किसी ओर से मदीने के अन्दर प्रेवश न कर जाए, उस समय भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की इच्छा यही थी कि ख़ुदा तआला की इबादत यथा समय उचित प्रकार से अदा हो जाए। मुसलमानों की उपासना यहूदियों, ईसाइयों और हिन्दुओं की भांति सप्ताह में किसी एक दिन नहीं हुआ करती अपितु मुसलमानों की इबादत (उपासना) एक दिन में पाँच बार होती है। ऐसी ख़तरनाक अवस्था में तो दिन में एक बार भी नमाज़ अदा करना मनुष्य के लिए कठिन है कहाँ, पाँच समय और वह भी यथाविधि नियमपूर्वक बाजमाअत (सामूहिक तौर पर) नमाज़ अदा की जाए, परन्तु इन विकट परिस्थितियों में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ये पाँचों नमाज़ें निर्धारित समय पर अदा करते थे और यदि एक दिन शत्रु के भीषण आक्रमण के कारण आप[स.] अपने रब्ब का नाम सन्तोष और शान्ति से यथा समय ने ले सके तो आपको अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचा। उस समय सामने से शत्रु आक्रमण कर रहा था तथा पीछे से बनू क़ुरैज़ा इस घात में थे कि कोई अवसर मिल जाए तो मुसलमानों में सन्देह पैदा किए बिना वे मदीने के अन्दर घुस कर स्त्रियों और बच्चों का वध कर दें। अतः एक दिन बनू क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह मालूम करे कि स्त्रियां और बच्चे अकेले ही हैं अथवा पर्याप्त सिपाही सुरक्षा पर नियुक्त हैं। जिस विशेष घेरे में वे विशेष-विशेष ख़ानदान जिन्हें शत्रु से बहुत ख़तरा था एकत्र कर दिए गए थे उसके निकट एक जासूस ने आकर घूमना और चारों ओर से निरीक्षण करना प्रारम्भ किया कि मुसलमान सैनिक कहीं आस-पास छुपे हुए तो नहीं। वह अभी इसी टोह में लगा था कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की फूफी हज़रत सफ़िया[रज़ि.] ने उस देख लिया। संयोग से उस समय वहाँ एक ही मुसलमान मौजूद था और वह भी बीमार था। हज़रत सफ़िया[रज़ि.] ने उस से कहा कि यह व्यक्ति काफी समय से स्त्रियों के क्षेत्र में मंडला रहा है और जाने का नाम नहीं लेता तथा चारों ओर देखता फिरता है। यह निश्चत ही जासूस है; तुम इसका मुकाबला करो, ऐसा न हो कि शत्रु परिस्थितियों पर पूर्णरूप से अवगत हो कर इधर आक्रमण कर दे। इस रोगग्रस्त सहाबी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, तब हज़रत सफ़िया[रज़ि.] ने स्वयं एक बड़ा बांस लेकर उस व्यक्ति का मुकाबला किया तथा अन्य स्त्रियों की सहायता से उसे मारने में सफल हो गईं। छान-बीन करने पर ज्ञात हुआ कि वह यहूदी बनू क़ुरैज़ा का जासूस था। अतः मुसलमान और अधिक घबराए तथा समझे कि अब मदीने का यह भाग भी सुरक्षित नहीं है परन्तु सामने की ओर से शत्रु का इतना दबाव था कि वे इस ओर की सुरक्षा की कोई व्यवस्था भी नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने स्त्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी और जैसा कि वर्णन किया जा चुका है बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ को स्त्रियों की सुरक्षा के लिए शहर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की सुरक्षा तथा अठारह-बीस हज़ार सेना के मुकाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए। इस परिस्थिति में कुछ मुसलमान घबरा कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए और कहा हे अल्लाह के रसूल ! परिस्थितियां नितान्त भयानक रूप धारण कर चुकी हैं अब प्रकट रूप से मदीने के बचने की कोई आशा दिखाई नहीं देती; आप[स.] ख़ुदा तआला से विशेष तौर पर दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिसके पढ़ने से हम पर ख़ुदा तआला की कृपा हो। आप[स.] ने फ़रमाया तुम लोग घबराओ नहीं, तुम ख़ुदा तआला से यह दुआ किया करो कि तुम्हारे दोषों पर पर्दा डाले, तुम्हारे हृदयों को दृढ़ता प्रदान करे तथा घबराहट को दूर करे। फिर आप[स.] ने स्वयं भी इस प्रकार दुआ की

اَللّٰھُمَّ مُنزل الْکِتٰبِ سَرِیْع الْحِساب اھْزِمِ الْاَحْزَاب اَللّٰھُمَّ اھْزِمْھُمْ وانصرنا علیھم وَزلزلھُمْ

और इसी प्रकार यह दुआ की

یَاصَرِیْخَ الْمَکْرُوْبِیْنَ یَامُجِیْب الْمُضْطَرِّیْنَ اکْشِفْ ھَمِّیْ وَغَمِّیْ وَکِرْبِیْ فَاِنَّکَ تَرٰی
مَانزل بِی وَ بِاَصْحَالِیْ

हे अल्लाह ! जिसने मुझ पर क़ुर्आन करीम उतारा है, जो अपने बन्दों से अति शीघ्र हिसाब ले सकता है यह गिरोह जो संगठित होकर आए हैं उन्हें पराजित कर दे। अल्लाह! मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें पराजित कर तथा हमें विजय प्रदान कर तथा उन के इरादों को छिन्न-भिन्न कर दे, हे विवश लोगों की पुकार सुनने वाले, हे व्याकुल लोगों की गुहार सुनने वाले! मेरी व्याकुलता और चिन्ता का निवारण कर, क्योंकि तू उन संकटों को जानता है जिनसे मैं और मेरे साथियों का सामना है।

दुआ की दरख़्वास्त

जनाब सुहैल अहमद साहब अपने, अपने वालिदैन एवं समस्त परिवार के लिए जमाअत के सभी अहबाब से दुआ की दरख़्वास्त करते हैं।

अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे, ईमान, सेहत, में बरकत अता फ़रमाए। आमीन।

जनाब सुहैल अहमद साहब
जमाअत: आद्रा | ज़िला: पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

बनी मुस्तलिक़ का युद्ध

उहद के युद्धोपरान्त मक्का में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से जो शत्रुता थी और आप[स.] के विपरीत लोगों में घृणा फैलाने के लिए देश भर में जो उपाय कर रहे थे उनकी परवाह न करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस विकट संकट के समय में मक्का के निर्धनों की सहायता के लिए धन राशि एकत्र की परन्तु इस भलाई का भी मक्का वालों पर कुछ प्रभाव न हुआ तथा उनकी शत्रुता में कुछ अन्तर न आया अपितु वे शत्रुता में और भी बढ़ गए। ऐसे क़बीले भी जो इस से पूर्व मुसलमानों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करते थे शत्रु बन गए। उन कबीलों में से एक क़बीला बनी मुस्तलिक़ का था; मुसलमानों के साथ उनके संबंध अच्छे थे, परन्तु अब उन्होंने मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ कर दी। जब हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को उन की तैयारी का ज्ञान हुआ तो आपने वस्तु स्थिति मालूम करने के लिए कुछ लोग भेजे जिन्होंने वापस आकर उन सूचनाओं को सच बताया। इस पर हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि स्वयं जाकर इस नए आक्रमण का सामना करें। अतः आप ने एक सेना तैयार की तथा उसे लेकर बनू मुस्तलिक की ओर गए। जब मुसलमानों की सेना का शत्रुओं से सामना हुआ तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने प्रयास किया कि शत्रु युद्ध किए बिना पीछे हट जाने पर तैयार हो जाए, परन्तु उन्होंने इन्कार किया। अतः युद्ध हुआ और कुछ ही घंटों में शत्रु को पराजय का मुख देखना पड़ा।

चूंकि मक्का के काफ़िर मुसलमानों को हानि पहुँचाने पर तुले हुए थे तथा मित्र क़बीले भी शत्रु बन रहे थे इसलिए उन धोखेबाज़ों ने भी जो मुसलमानों के अन्दर मौजूद थे इस अवसर पर साहस किया कि वे मुसलमानों की ओर से युद्ध में भाग लें। कदाचित् उन का विचार था कि इस प्रकार उन्हें मुसलमानों को हानि पहुँचाने का अवसर प्राप्त हो जाएगा बनू मुसतलिक के साथ छेड़ा गया युद्ध कुछ ही घंटों में समाप्त हो गया। अतः इस युद्ध के मध्य मुनाफ़िक लोगों को उपद्रव करने का अवसर प्राप्त न हो सका परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि बनू मुस्तलिक़ की बस्ती में कुछ दिन ठहरें। आपके अस्थायी तौर पर ठहरने के समय एक मक्का निवासी मुसलमान का एक मदीना निवासी मुसलमान से कुएं से पानी निकालने के संबंध में झगड़ा हो गया। संयोग से यह मक्का निवासी एक आज़ादी प्राप्त दास था, उसने मदीने वाले व्यक्ति को मारा जिस पर उस मदीनावासी ने अन्सार (मदीना वाले मुसलमान) को पुकारा और मक्कावासी ने मुहाजिरों (मक्का के प्रवासी) को पुकारा और इस प्रकार परस्पर उपद्रव फैल गया। किसी ने यह मालूम करने का प्रयास न किया कि मूल घटना क्या है। दोनों ओर से युवकों ने तलवारें निकाल लीं। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल ने समझा कि ऐसा अवसर ख़ुदा की ओर से मिल गया है। उसने चाहा कि आग पर तेल डाले। उसने मदीना वालों को सम्बोधित करके कहा कि इन मुहाजिरों पर तुम्हारी सहानुभूति सीमा से अधिक बढ़ गई है और तुम्हारे सद्व्यवहार से इनके सर फिर गए हैं और ये दिन प्रतिदिन तुम्हारे सर चढ़ते जाते हैं। निकट था कि इस भाषण का वही प्रभाव होता जो अब्दुल्लाह चाहता था और झगड़ा बढ़ जाता परन्तु ऐसा न हुआ। अब्दुल्लाह ने अपने उपद्रवपूर्ण भाषण का अनुमान लगाने में ग़लती की थी तथा यह समझते हुए कि अन्सार पर इनका प्रभाव हो गया है उसने यहां तक कह दिया कि हम मदीना में वापस पहुँच लें फिर जो अत्यन्त समादृत व्यक्ति है वह अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति को बाहर निकाल देगा। अत्यन्त समादृत व्यक्ति से उसका अभिप्राय स्वयं वह था और अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (ऐसा कहने से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उसके मुख से ज्यों ही यह बात निकली मोमिनों पर उसकी वास्तविकता प्रकट हो गई। उन्होंने कहा यह साधारण बात नहीं अपितु यह शैतान का कथन है जो हमें पथभ्रष्ट करने आया है। एक युवक उठा और उसने अपने चाचा के द्वारा यह सूचना हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को पहुँचा दी। आप[स.] ने अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल और उसके साथियों को बुलाया और पूछा क्या बात हुई है? अब्दुल्लाह और उसके साथियों ने सरासर इन्कार कर दिया और कह दिया कि यह बात जो हम से सम्बद्ध की गई है हुई ही नहीं। आप[स.] ने कुछ न कहा, परन्तु सत्य बात का फैलना आरम्भ हो गया। कुछ समय के पश्चात् अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल के बेटे अब्दुल्लाह ने भी यह बात सुनी वह तुरन्त हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरे पिता ने आप[स.] का अपमान किया है, उसका दण्ड मृत्यु है। यदि आप यही निर्णय दें तो मैं चाहता हूँ कि आप[स.] मुझे आदेश दें कि मैं अपने पिता का वध करूँ। यदि आप[स.] किसी अन्य को आदेश देंगे और मेरा पिता उसके हाथों मारा जाएगा तो हो सकता है कि मैं उस व्यक्ति का वध करके अपने पिता का प्रतिशोध लूँ और इस प्रकार ख़ुदा तआला की अप्रसन्नता का कारण बनूं। परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने फ़रमाया मेरा कदापि इरादा नहीं। मैं तुम्हारे पिता के साथ दया एवं सहानुभूति का व्यवहार करूँगा[1] । जब अब्दुल्लाह ने अपने पिता की बेवफ़ाई और उसके कटु शब्दों का मुहम्मद (स.अ.व.) की दयालुता और सहानुभूति से तुलना की तो उसका ईमान और बढ़ गया तथा अपने पिता के विरुद्ध उसका क्रोध भी इसी अनुपात से उन्नति कर गया। जब सेना नदी के निकट पहुँची तो उसने आगे बढ़कर अपने पिता का मार्ग रोक लिया और कहा कि मैं तुम्हें मदीना के अन्दर नहीं जाने दूँगा जब तक तुम वे शब्द वापस न ले लो जो तुम ने मुहम्मद (स.अ.व.) के विरुद्ध प्रयोग किए हैं। जिस मुख से यह बात निकली है कि ख़ुदा का नबी अपमानित है और तुम सम्मानित हो उसी मुख से तुम्हें यह बात भी कहना होगी कि ख़ुदा का नबी सम्मानित है और तुम अपमानित हो जब तक तुम यह न कहोगे, तब तक मैं तुम्हें आगे कदापि न जाने दूँगा। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल स्तब्ध रह गया तथा भयभीत हुआ और कहने लगा हे मेरे बेटे ! मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। मुहम्मद (स.अ.व.) सम्मानित है और मैं अपमानित हूँ। नौजवान अब्दुल्लाह ने इस पर अपने पिता को छोड़ दिया[2] ।

मदीना पर समस्त अरबों की चढ़ाई ख़न्दक का युद्ध

इस से पूर्व यहूदयों के दो क़बीलों का वर्णन किया जा चुका है। जो युद्ध, उपद्रव, उत्पात, हिंसा करने की योजनाओं के कारण मदीना से निकाल दिए गए थे, उनमें से बनू नज़ीर का कुछ भाग तो शाम की ओर पलायन कर गया था और कुछ भाग मदीना से उत्तर की ओर ख़ैबर नामक एक नगर की ओर पलायन कर गया था। ख़ैबर अरब में यहूदयों का एक बहुत बड़ा केन्द्र था और एक सुरक्षित दुर्ग के समान नगर था। बनू नज़ीर यहाँ पहुँच कर मुसलमानों के विरुद्ध अरबों को उत्तेजित करने लगा। मक्का निवासियों के हृदयों में पहले ही प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक रही थी उसे और अधिक प्रज्वलित करने के लिए किसी अन्य उत्तेजना की आवश्यकता न थी। इसी प्रकार ग़त्फ़ान नामक नज्द का क़बीला जो अरब क़बीलों में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता था वह भी मक्का वालों की मित्रतावश इस्लाम की शत्रुता में अग्रसर रहता था। अब यहूद ने क़ुरैश और ग़त्फ़ान को उत्तेजित करने के अतिरिक्त बनू सलीम और बनू असद दो अन्य शक्तिशाली क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध भड़काना आरम्भ कर दिया और इसी प्रकार बनू असद नामक कबीला जो यहूद का मित्र था उसे भी मक्का के काफ़िरों का साथ देने के लिए तैयार किया। एक लम्बी तैयारी के पश्चात् अरब के शक्तिशाली क़बीलों को मिलाकर एक सामान्य एकता की नींव रख दी गई जिसमें मक्का निवासियों के अतिरिक्त आस-पास के क़बीले तथा नज्द और मदीना से उत्तर की दिशा में आबाद क़बीले भी शामिल थे तथा यहूद भी शामिल थे। इन सभी कबीलों ने संगठित होकर मदीना पर आक्रमण करने के लिए एक विशाल सेना जुटा ली। यह शवाल माह, 5 हिज्री अन्तिम फरवरी-मार्च 627 ई.[1] की घटना है। विभिन्न इतिहासकारों ने इस सेना का अनुमान दस हज़ार से लेकर चौबीस हज़ार तक लगाया है परन्तु स्पष्ट है कि समस्त अरब के एकत्र हो जाने का परिणाम केवल दस हज़ार सैनिक नहीं हो सकता। निश्चय ही चौबीस हज़ार वाला अनुमान अधिक उचित है और यदि कुछ नहीं तो यह सेना अठारह-बीस हज़ार की संख्या में अवश्य रही होगी। मदीना एक साधारण क़स्बा था, इस क़स्बे के विरुद्ध समस्त अरब का आक्रमण कोई साधारण आक्रमण नहीं था। मदीने के पुरुष एकत्र करके (जिनमें वृद्ध, युवा और बच्चे भी सम्मिलित हों) मात्र तीन हज़ार लोग निकल सकते थे। इसके विपरीत शत्रु-सेना बीस और चौबीस हज़ार के लगभग थी। फिर वे सब फ़ौजी लोग थे, जवान और युद्ध के योग्य थे; क्योंकि जब शहर में रह कर सुरक्षा का प्रश्न खड़ा होता है तो उसमें बूढ़े और बच्चे भी सम्मिलित हो जाते हैं, परन्तु जब सुदूर स्थान पर सेना चढ़ाई करने जाती है तो उसमें केवल जवान और शक्तिशाली लोग होते हैं। अतः यह बात निश्चित है कि काफ़िरों की सेना में बीस या पच्चीस हज़ार जितने भी लोग थे वे सब के सब शक्तिशाली युवक और अनुभवी सैनिक थे परन्तु मदीना के समस्त पुरुषों की संख्या बच्चों और विकलांगों को मिलाकर तीन हज़ार के लगभग थी। स्पष्ट है कि इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए यदि मदीना की सेना की संख्या तीन

हज़ार समझी जाए तो शत्रु की संख्या चालीस हज़ार मान लेना चाहिए और यदि शत्रु की सेना की संख्या बीस हज़ार समझी जाए तो मदीने की सेना की संख्या को केवल डेढ़ हज़ार समझना चाहिए। जब इस सेना के एकत्र होने की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को पहुँची तो आप[स.] ने सहाबा को एकत्र करके परामर्श किया कि इस अवसर पर क्या करना चाहिए। सहाबा[रज़ि.] में से सलमान फ़ारसी[रज़ि.] जो फ़ारस के सर्वप्रथम मुसलमान थे से पूछा कि तुम्हारे देश में ऐसे अवसर पर क्या करते हैं। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जब नगर असुरक्षित हो और सैनिक थोड़े हों तो हमारे देश के लोग ख़न्दक (खाई) खोदकर उसके अन्दर घेराबन्द हो जाया करते हैं। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उनके इस प्रस्ताव को पसन्द किया। मदीना के एक ओर टीले थे दूसरी ओर ऐसे मुहल्ले थे जिन के मकान एक दूसरे से जुड़े हुए थे तथा शत्रु केवल कुछ गलियों में से गुज़र कर आ सकता था, तीसरी ओर कुछ मकान, कुछ बाग़ और कुछ दूरी पर यहूदी क़बीला बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे। यह कबीला चूंकि मुसलमानों से एकता की संधि कर चुका था इसलिए यह दिशा भी सुरक्षित समझ ली गई थी, चौथी ओर खुला मैदान था जिसकी ओर से ख़तरा हो सकता था। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि इस खुले मैदान की ओर खन्दक (खाई) बना दी जाए ताकि शत्रु अचानक शहर में प्रवेश न कर सके। अतः आप[स.] ने दस-दस गज़ का भाग दस-दस लोगों को खोदने के लिए दे दिया और इस प्रकार आप[स.] ने एक मील लम्बी खाई खुदवाई। जब खाई खोदी जा रही थी तो भूमि में एक ऐसा पत्थर निकला जो लोगों से किसी प्रकार से भी टूट नहीं रहा था। सहाबा[रज़ि.] ने इस बात की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को दी। अतः आप[स.] वहाँ स्वयं गए, अपने हाथ से कुदाल पकड़ा और ज़ोर से उस पत्थर पर मारा; कुदाल के पड़ने से उस पत्थर में से प्रकाश निकला, आप[स.] ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर दोबारा आप ने कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला, आप ने फिर फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर आप[स.] ने तीसरी बार कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला और साथ ही पत्थर टूट गया। इस अवसर पर पुनः आप ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। सहाबा[रज़ि.] ने आप से पूछा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने तीन बार अल्लाहो अकबर क्यों फ़रमाया? आप[स.] ने फ़रमाया पत्थर पर कुदाल पड़ने से तीन बार जो प्रकाश निकला, तीनों बार ख़ुदा ने मुझे इस्लाम की भावी उन्नति के दृश्य दिखाए। पहली बार के प्रकाश में क़ैसर के शासन के अधीन शाम के महल दिखाए गए तथा उनकी कुंजियां मुझे दी गईं। दूसरी बार के प्रकाश में मुझे मदायन के श्वेत महल दिखाए गए तथा फ़ारस के शासन की कुंजियां मुझे दी गईं, तीसरी बार के प्रकाश में मुझे सनआ के दरवाज़े दिखाए गए, यमन के राज्य की मुझे कुंजियां दी गईं। अतः तुम ख़ुदा तआला के वादों पर विश्वास रखो, शत्रु तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता[1]। ये थोड़े से लोग फ़ौजी नियमों के अनुसार इतनी लम्बी ख़न्दक तो नहीं खोद सकते थे अतः यह ख़न्दक इतना ही लाभ दे सकती थी कि शत्रु अचानक अन्दर न घुस सके अन्यथा शत्रु के लिए इस ख़न्दक़ से पार होना असंभव नहीं था। अतः अब जो घटनाएँ वर्णन होंगी उन से ऐसा ही सिद्ध होता है। शत्रु ने भी मदीना की परिस्थितियों को दृष्टि में रख कर इसी ओर से आक्रमण करने की योजना बनाई हुई थी। अतः शत्रु की विशाल सेना इसी ओर से मदीने में प्रवेश करने कि लिए आगे बढ़ी। रसूले करीम (स.अ.व.) को इसकी सूचना मिली तो आपने भी कुछ लोगों को शहर के अन्य भागों की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया तथा शेष लोगों को साथ लेकर जो बारह सौ के लगभग थे ख़न्दक की सुरक्षा के लिए गए।

ख़न्दक के युद्ध के समय इस्लामी सेना की वास्तविक संख्या?

यहां सेना की संख्या के बारे में इतिहासकारों में अत्यधिक मतभेद हैं। कुछ लोगों ने इस सेना की संख्या तीन हज़ार लिखी है, कुछ ने बारह-तेरह सौ और कुछ ने सात-सौ। यह इतना बड़ा मतभेद है कि जिसकी व्याख्या प्रायः कठिन मालूम होती है तथा इतिहासकार इसे हल नहीं कर सके परन्तु मैंने इस की वास्तविकता को पा लिया है और वह यह कि तीनों प्रकार की रिवायतें सही हैं। यह बताया जा चुका है कि उहद के युद्ध में मुनाफ़िक लोगों के वापस आ जाने के पश्चात् मुसलमानों की सेना केवल सात सौ सदस्यों पर आधारित थी। अहज़ाब का युद्ध इसके दो वर्ष पश्चात् हुआ है तथा इस अवधि में कोई बड़ा क़बीला इस्लाम को स्वीकार करके मदीने में आकर आबाद नहीं हुआ। अतः सात सौ लोगों का सहसा तीन हज़ार हो जाना अनुमान के विपरीत है। दूसरी ओर यह बात भी युक्ति संगत नहीं कि उहद के दो वर्ष पश्चात् तक इस्लाम की उन्नति के बावजूद युद्ध करने के योग्य मुसलमान इतने ही रहे जितने उहद युद्ध के समय थे। अतः इन दोनों समीक्षाओं के बाद वह रिवायत ही उचित मालूम होती है कि लड़ने के योग्य मुसलमान अहज़ाब युद्ध के समय बारह सौ थे। अब रहा यह प्रश्न कि फिर किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा है, तो इसका उत्तर यह है कि ये दो रिवायतें (वर्णन) पृथक-पृथक परिस्थितियों और दृष्टिकोणों के अन्तरगत वर्णन की गई हैं। अहज़ाब युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग वह था जब अभी शत्रु मदीने के सामने नहीं आया था और खाई (ख़न्दक़) खोदी जा रही थी। इस कार्य में मिट्टी ढोने का कार्य कम से कम बच्चे भी कर सकते थे और कुछ स्त्रियाँ भी इस कार्य में सहयोग दे सकती थीं। अतः जब तक खाई खोदने का कार्य जारी रहा, मुसलमान सेना की संख्या तीन हज़ार थी, परन्तु इस में बच्चे भी सम्मिलित थे तथा सहाबी स्त्रियों की तेजस्वी भावना देख कर हम कह सकते हैं कि इस संख्या में कुछ स्त्रियाँ भी सम्मिलित रही होंगी जो खाई खोदने का कार्य तो नहीं करती होंगी, परन्तु अतिरिक्त कार्यों में भाग लेती होंगी। यह मेरा विचार ही नहीं, इतिहास से भी इस विचार की पुष्टि होती है। अतः लिखा है कि जब खाई खोदने का समय आया सब लड़के एकत्र कर लिए गए तथा सभी पुरुष चाहे वे बड़े थे या बच्चे; खाई खोदने अथवा उसमें सहायता देने का कार्य करते थे। फिर जब शत्रु आ गया और युद्ध आरम्भ हुआ तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उन समस्त लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे ठहरें चाहे चले जाएँ।[1]

इस रिवायत से विदित होता है कि खाई खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी तथा युद्ध के समय कम हो गई क्योंकि अवयस्कों को वापस चले जाने का आदेश दे दिया गया था। अतः जिन रिवायतों में तीन हज़ार की चर्चा है वह खाई खोदने के समय की संख्या बताती हैं जिसमें छोटे बच्चे भी सम्मिलित थे तथा जैसा कि मैंने अन्य युद्धों को देखते हुए अनुमान द्वारा जो परिणाम निकाला है कुछ स्त्रियाँ भी थीं परन्तु बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध प्रारम्भ हो गया और केवल वयस्क पुरुष रह गए। अब रहा यह प्रश्न कि तीसरी रिवायत जो सात सौ सिपाही बताती है क्या वह भी उचित है?

इस का उत्तर यह है कि यह रिवायत इतिहासकार इब्ने इस्हाक़ ने लिखी है जो विश्वसनीय इतिहासकार है तथा इब्ने हज़्म जैसे प्रकाण्ड विद्वान ने उस की भरपूर पुष्टि की है। अतः इसके संबंध में भी सन्देह नहीं किया जा सकता तथा उसकी पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि इतिहास की गहरी छान-बीन से विदित होता है कि जब युद्ध के समय बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना में जा मिले तथा उन्होंने यह इरादा किया कि मदीना पर अचानक आक्रमण कर दे परन्तु उनकी दूषित भावनाओं का रहस्य प्रकट हो गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने मदीना की उस ओर की सुरक्षा आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे तथा जिस ओर इस विचार के अनुसार सुरक्षा की उपेक्षा की गई थी कि बनू क़ुरैज़ा हमारे साथी हैं। ये लोग शत्रु को उस ओर से न आने देंगे। अतः इतिहास द्वारा ज्ञात होता है कि जब बनू क़ुरैज़ा के द्रोह का पता लगा, तो चूंकि बनू क़ुरैज़ा के विश्वास पर स्त्रियाँ उस क्षेत्र में रखी गई थीं। जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे और असुरक्षित थीं; रसूले करीम (स.अ.व.) ने अब उनकी सुरक्षा आवश्यक समझी तथा मुसलमानों के दो सैन्य दल तैयार करके स्त्रियों के ठहरने के दोनों भागों पर नियुक्त कर दिए। मुस्लिमा बिन असलम[रज़ि.] को दो सौ सहाबा देकर एक स्थान पर नियुक्त किया और ज़ैद बिन हारिस[रज़ि.] को तीन सौ सहाबा देकर दूसरे स्थान पर नियुक्त किया तथा आदेश दिया कि थोड़े-थोड़े समय पर उच्च स्वर में अल्लाहो अकबर का उदघोष करते रहें ताकि ज्ञात होता रहे कि स्त्रियाँ सुरक्षित हैं। इस रिवायत से हमारी यह कठिनाई कि इब्ने इस्हाक़ ने सात सौ सैनिक ख़न्दक़ युद्ध में क्यों बताए हैं हल हो जाती है क्योंकि बारह सौ सैनिकों में से जब पाँच सौ सिपाही स्त्रियों की सुरक्षा के लिए भेज दिए गए तो बारह सौ की सेना मात्र सात सौ रह गई तथा इस प्रकार ख़न्दक़ युद्ध के सैनिकों की संख्या के बारे में इतिहासों में बहुत मतभेद पाया जाता है उसका निवारण हो गया।

सारांश यह कि इस महान संकट के समय ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए रसूले करीम (स.अ.व.) के पास केवल सात सौ लोग थे। इस में कोई सन्देह नहीं कि आप सने ख़न्दक खोदी थी परन्तु फिर भी इतनी बड़ी सेना के ख़न्दक़ के पार से रोकना भी इतने कम लोगों के लिए असंभव था परन्तु ख़ुदा तआला की अलौकिक सहायता के सहारे यह मुट्ठी भर सेना ईमान और विश्वास के साथ ख़न्दक़ के पीछे शत्रु की विशाल सेना की प्रतीक्षा करने लगी और स्त्रियाँ तथा बच्चे दो अलग-अलग स्थानों पर एकत्र कर दिए गए। शत्रु जब ख़न्दक़ तक पहुँचा तो चूंकि यह अरबों के लिए बिल्कुल नई बात थी और वे इस प्रकार के युद्ध के लिए तैयार न थे। उन्होंने ख़न्दक़ के सामने अपने शिविर लगा दिए और मदीने में प्रवेश करने के लिए उपाय सोचने लगे।

बनू क़ुरैज़ा का विश्वासघात

शेष पृष्ठ 8 पर

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -6)

ख़ुतबा जुमा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुमा और नमाज़ अस्र को जमा करके पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज मस्जिद के इस उद्घाटन और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की इमामत में नमाज़ जुमा अदा करने के लिए सिडनी (Sydney), मेलबर्न, कैनबरा और एडिलेड से बहुत लंबा सफर तय करके जमाअत के लोग और परिवार ब्रिस्बेन पहुँचे थे। सिडनी और कैनबरा से सड़क के रास्ते आने वाले लोगों के सफर का समय लगभग बारह घंटे था। इसी तरह मेलबर्न और एडिलेड से आने वाले लोग तीन से चार घंटे का हवाई सफर करके ब्रिस्बेन पहुँचे थे और फिर नमाज़ जुमा अदा करने के बाद उतना ही सफर करके वापस गए।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय में तशरीफ़ लाए और पारिवारिक मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज शाम के इस सत्र में 57 परिवारों के 269 सदस्यों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। कनाडा से आने वाले दो व्यक्तियों ने भी मुलाकात का सम्मान प्राप्त किया।

हर एक को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी मिला। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कृपापूर्वक शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों और बच्चियों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दी। मुलाकातों का यह कार्यक्रम नौ बजकर बीस मिनट तक जारी रहा।

तकरीब-ए-आमीन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ ले आए, जहाँ कार्यक्रम के अनुसार तकरीब-ए-आमीन हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 25 बच्चों और बच्चियों से कुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

अज़ीज़म अता-उल-करीम, दानियाल अहमद, कामिल अहमद, कामरान अहमद आरिफ, काशिफ़ रहीम, नदीमुल हक़, सालिह अहमद, सरमद अहमद, सैयद अहमद जावेद, लबीब अहमद, हम्माद अहमद, क़ासिम रहीम, शकील अहमद, इब्तिसाम असलम।

अज़ीज़ा आफिया नबील, आलिया सबाहत, अमीना कंवल, अनम बशीर, आतिफ़ा जावेद, माहम काशिफ़, मारिया वक़ास, शाफ़िया नूर क़मर, ज़ोहा अलीम ख़ान, हिबतुल वहीद, अलीशाह क़मर।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने नमाज़ मग़रिब और इशा को जमा करके पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

26 अक्तूबर, शनिवार 2013 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह चार बजे मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ लाए और नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालय की डाक और दुनिया की विभिन्न जमाअतों से प्राप्त होने वाली रिपोर्टों का अवलोकन किया और निर्देश प्रदान किए।

ब्रिस्बेन के बाहरी इलाके की सैर

आज स्थानीय जमाअत ने ब्रिस्बेन शहर से बाहर एक उपनगरीय क्षेत्र में सैर का कार्यक्रम बनाया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सवा बारह बजे अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और इस कार्यक्रम के अनुसार सैर के लिए रवाना हुए। रवाना होने से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने दुआ करवाई।

लगभग एक सौ किलोमीटर का फासला डेढ़ घंटे में तय करने के बाद एक बजकर पैंतालीस मिनट पर ड्यूरनबाह (Duranbab) के क्षेत्र में स्थित ट्रॉपिकल फ्रूट वर्ल्ड एंड रिसर्च पार्क (Tropical Fruit World & Research Park) पहुँचे। यहाँ इस पार्क के मालिक ने अपने प्रबंधकों के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का स्वागत किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस बाग़ के मालिक से बातचीत की।

इस मालिक ने बताया कि वह पिछले चालीस वर्षों से इस ट्रॉपिकल फ्रूट वर्ल्ड (Tropical Fruit World) का मालिक है और उसकी पत्नी, बेटी तथा दूसरे रिश्तेदारों ने मिलकर इस काम को संभाल रखा है। यह बाग़ दो सौ एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है और इसमें दुनिया के विभिन्न देशों के पाँच सौ प्रकार के फल मौजूद हैं। इसके अलावा प्रत्येक फल की आगे अलग-अलग किस्में भी हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर उन्होंने बताया कि हम ये फल सिडनी और ब्रिस्बेन के बाज़ारों में भी भेजते हैं।

यहाँ ऑस्ट्रेलिया में बसे पुराने आदिवासी समुदाय (Aboriginal Community) के तीन प्रतिनिधि—एक पिता और उसके दो जवान बेटे—अपने पारंपरिक कपड़ों में, अपने पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र डिड्जेरिडू (Didgeridoo) और क्लैप स्टिक्स (Clap Sticks) के साथ आए हुए थे। इन तीनों ने मिलकर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उन्होंने डिड्जेरिडू के माध्यम से संगीत की अलग-अलग धुनें निकालीं और दूसरे साथी ने हर धुन पर अपने पारंपरिक तरीके से अलग-अलग अंदाज़ में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

पिता साथ-साथ यह बताता रहा कि अलग-अलग धुनों पर कला का यह प्रदर्शन करके हम शांति का संदेश देते हैं। डिड्जेरिडू संगीत का वाद्ययंत्र है, जिसे पेड़ के तने या किसी बड़ी मोटी शाखा को अंदर से खोखला करके और उसमें छेद करके बनाया जाता है। इसकी लंबाई एक मीटर या उससे अधिक भी होती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुछ देर तक यह प्रदर्शन देखा।

इसके बाद उन्होंने दो सौ एकड़ क्षेत्र में फैले हुए इस बाग़ का दौरा किया। इस बाग़ में बहुत सुंदर ढंग से अलग-अलग पक्के रास्ते बनाए गए हैं, जहाँ विशेष प्रकार की बग्गी जैसी गाड़ियाँ चलती हैं, जिनके दोनों ओर खुले होते हैं। गाइड साथ-साथ माइक के माध्यम से इस बाग़ में लगाए गए फलदार पेड़ों और विभिन्न प्रकार के फलों के बारे में बताता जाता है।

इस बाग़ को फलों की दुनिया कहा जाता है। दुनिया के विभिन्न देशों में पाए जाने वाले फलों को यहाँ उगाया गया है। फलों की यह संख्या लगभग पाँच सौ है और फलों के पेड़ों की संख्या हजारों में है। इस बाग़ के अंदर एक नदी भी बनाई गई है, जो बल खाती हुई पूरे बाग़ में घूमती है। इस नदी में विशेष प्रकार की नावें चलाई जाती हैं। सैर करने वाले इन नावों के माध्यम से भी सैर करते हैं और फलों का नज़ारा देखते हैं।

फलों के अनुसार इस बाग़ के अलग-अलग हिस्से बनाए गए हैं और उनके बाकायदा नाम रखे गए हैं। कुछ नाम निम्नलिखित हैं:

साउथ पैसिफिक गार्डन (South Pacific Garden), मेडिसिनल गार्डन (Medicinal Garden), होम गार्डन (Home Garden), ट्रॉपिकल बेरी गार्डन (Tropical Berry Garden), इंडियन गार्डन (Indian Garden), एज़टेक गार्डन (Aztec Garden), अमेज़न गार्डन (Amazon Garden), चाइनीज़ गार्डन (Chinese Garden), साउथ ईस्ट एशियन गार्डन (South East Asian Garden), बुश टकर गार्डन (Bush Tucker Garden), रेयर फ्रूट्स ऑफ द वर्ल्ड गार्डन (Rare Fruits of the World Garden) आदि।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दौरे के दौरान इस बाग़ के विभिन्न हिस्सों को देखा।

इस बाग़ के एक परिसर में कुछ जानवर भी रखे गए हैं, जिनमें शुतुरमुर्ग और कंगारू शामिल हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कृपापूर्वक इन जानवरों के पास तशरीफ़ ले गए और अपने हाथ से कंगारुओं (Kangaroos) को उनका भोजन खिलाया। बारी-बारी से अलग-अलग कंगारू हुज़ूर अनवर के पास आते और हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ से हथेली पर रखा हुआ अपना भोजन खाते। इस तरह आज इन जानवरों ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की कृपाओं में हिस्सा पाया।

इसी बाग़ और पार्क के अंदर एक ट्रॉपिकल रेस्टोरेंट (Tropical Restaurant) है, जहाँ एक हिस्सा निर्धारित करके नमाज़ ज़ुहर और अस्र की अदायगी तथा दोपहर के भोजन का प्रबंध किया गया था।

इस बाग़ की सैर के बाद साढ़े तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर और अस्र को जमा करके पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद दोपहर का भोजन किया गया। इसके बाद चार बजकर पचास मिनट पर वहाँ से वापस जाने के लिए रवाना हुए।

वापस जाते हुए पहले से तय कार्यक्रम के अनुसार ब्रिस्बेन शहर के बीच से गुजरते हुए सफर किया गया। ऊँची-ऊँची इमारतों वाला ब्रिस्बेन एक बहुत सुंदर शहर है। इसके बीच से एक नदी गुजरती है, जिस पर एक लंबा पुल बनाया गया है। यह पुल पूरी रात रंग-बिरंगी रोशनियों से सजा रहता है। इन चीज़ों ने इस शहर की सुंदरता को और बढ़ा दिया है।

इस पुल के ऊपर से गुजरते हुए पास ही क्रिकेट का वह स्टेडियम भी दिखाई देता है, जहाँ दुनिया के विभिन्न देशों से आने वाली क्रिकेट की टीमें मैच खेलती हैं।

इस तरह ब्रिस्बेन शहर से होते हुए सवा सात बजे शाम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अहमदिया सेंटर बैतुल मसरूर में तशरीफ़ लाए और कुछ देर के लिए अपने आवासीय हिस्से में तशरीफ़ ले गए।

आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ लाए और नमाज़ मग़रिब तथा इशा को जमा करके पढ़ाया।

शेष ..

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 24 September 2026 Issue No. 39

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

102 बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

यह बंदा अर्ज़ करता है कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल बताया करते थे कि जब मैं पहली बार क़ादियान आया तो छोटी मस्जिद के पास जो चौक है, वहाँ इक्के से उतरा। फिर मैंने इक्के वाले से या शायद किसी और से पूछा कि मिर्ज़ा साहब कहाँ हैं? उस समय मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन अपने आँगन में चारपाइयों पर बैठे हुए सभा लगा रहे थे। उसने उनकी ओर इशारा करके कहा कि वे हैं।

मैंने उधर देखा तो मेरा दिल बैठ गया और मैंने इक्के वाले से कहा कि अभी मत जाओ, ज़रा ठहर जाओ, शायद मुझे अभी वापस जाना पड़े। फिर मैं आगे बढ़कर उस सभा में गया, लेकिन मेरे दिल पर ऐसा असर था कि मैं जाकर बिना सलाम किए चारपाई पर बैठ गया।

मिर्ज़ा इमामुद्दीन ने या शायद मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने मेरा नाम पूछा। मैंने बताया तो उन्होंने कहा कि आप शायद मिर्ज़ा साहब से मिलने आए हैं। मौलवी साहब फरमाते थे कि तब मेरी जान में जान आई कि यहाँ कोई और मिर्ज़ा भी है।

फिर उन्होंने मेरे साथ एक आदमी कर दिया, जो मुझे छोटी मस्जिद में छोड़ गया। उस समय हज़रत साहब मकान के अंदर तशरीफ़ रखते थे। आपको सूचना दी गई तो आपने फरमाया कि मैं ज़ुहर की नमाज़ के समय बाहर आऊँगा। फिर हज़ूर तशरीफ़ लाए तो मेरी मुलाकात हुई।

यह बंदा अर्ज़ करता है कि हज़रत मौलवी साहब बराहीने अहमदिया के ज़माने में यहाँ आए थे। मौलवी शेर अली साहब बताया करते थे कि हज़रत साहब ने कहीं लिखा है कि मैं दुआ किया करता था कि हे ख़ुदा! मुझे मूसा की तरह हारून अता कर। फिर जब मौलवी साहब आए तो मैंने देखते ही पहचान लिया कि हाज़ा दुआई (यह मेरी दुआ है)।

(यह बंदा अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम में अपनी इस दुआ का ज़िक्र किया है, लेकिन वहाँ हज़रत मूसा और हारून का उदाहरण नहीं दिया। और अजीब बात है कि जैसा कि हज़रत मौलवी साहब की वह लेखनी, जो करामातुस्सादिक़ीन में दर्ज है, उससे पता चलता है, हज़रत मौलवी साहब को भी अपनी ओर से ऐसे पूर्ण पुरुष की तलाश थी, जो इस उथल-पुथल भरे ज़माने के फितनों का मुकाबला कर सके और इस्लाम को दूसरे धर्मों पर विजयी करके दिखा सके।)

103 बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल बताया करते थे कि जब मैं जम्मू की नौकरी से फ़ारिग होकर भेरा आया तो मैंने भेरा में एक बड़ा मकान बनवाना शुरू किया और उसके लिए कुछ निर्माण सामग्री खरीदने के लिए लाहौर आया।

लाहौर आकर मुझे ख़याल आया कि चलो, क़ादियान भी एक दिन होकर आते हैं। ख़ैर, मैं यहाँ आया। हज़रत साहब से मिला तो हज़ूर ने फरमाया, "मौलवी साहब! अब तो आप नौकरी से फ़ारिग हैं। उम्मीद है कि कुछ दिन यहाँ ठहरेंगे।"

मैंने अर्ज़ किया, "हाँ हज़ूर, ठहरूँगा।"

फिर कुछ दिनों के बाद फरमाने लगे, "मौलवी साहब! आपको अकेले तकलीफ़ होती होगी। अपने घरवालों को भी यहाँ बुला लें।"

मैंने घरवालों को भेरा ख़त लिख दिया कि मकान का काम बंद करा दो और यहाँ चले आओ।

फिर एक अवसर पर हज़रत साहब ने मुझसे फरमाया, "मौलवी साहब! अब आप अपने पिछले वतन भेरा का ख़याल भी दिल में न लाएँ।"

मौलवी साहब फरमाते थे कि मैं दिल में बहुत डर गया कि ऐसा भी हो सकता है कि मैं वहाँ कभी न जाऊँ, लेकिन यह कैसे होगा कि मेरे दिल में भेरा का ख़याल भी न आए?

मगर मौलवी साहब फरमाते थे कि ख़ुदा का ऐसा फ़ज़्ल हुआ कि आज तक मेरे दिल में कभी यह ख़याल नहीं आया कि भेरा भी मेरा वतन हुआ करता था।

(यह बंदा अर्ज़ करता है कि हज़रत मौलवी साहब संभवतः जम्मू की नौकरी से 1891 ई. या 1892 ई. में फ़ारिग हुए थे और 1892 ई. या 1893 ई. में क़ादियान आ गए थे।)

104 बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मुझसे मौलवी शेर अली साहब ने बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि हमारी जितनी अरबी तहरीरें हैं, ये सब एक तरह का इल्हाम ही हैं, क्योंकि ये सब ख़ुदा की ख़ास मदद से लिखी गई हैं। फ़रमाते थे कि कभी-कभी मैं कई शब्द और वाक्य लिख जाता हूँ, लेकिन मुझे उनके अर्थ मालूम नहीं होते। फिर लिखने के बाद शब्दकोश देखता हूँ तो पता चलता है।

इसके अलावा, मौलवी साहब बताते हैं कि हज़रत साहब अरबी किताबों की कापियाँ और प्रूफ़ हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल और मौलवी मुहम्मद अहसन साहब के पास भी भेजा करते थे और फ़रमाते थे कि अगर किसी जगह सुधार हो सकता हो तो कर दें।

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल तो पढ़कर उसी तरह वापस भेज देते थे, लेकिन मौलवी मुहम्मद अहसन साहब बड़ी मेहनत करके उसमें कुछ जगह सुधार के तौर पर शब्द बदल देते थे।

मौलवी शेर अली साहब बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार फ़रमाया कि मौलवी मुहम्मद अहसन साहब अपनी ओर से सुधार करते हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि मेरे लिखे हुए शब्द अधिक उपयुक्त और प्रभावशाली होते हैं और मौलवी साहब का शब्द कमज़ोर होता है। लेकिन मैं कहीं-कहीं उनका लिखा हुआ शब्द भी रहने देता हूँ, ताकि उनकी दिल-आज़ारी न हो कि उनके लिखे हुए सभी शब्द काट दिए गए हैं।

यह विनीत अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नियम था कि अरबी किताबों की कापियाँ और प्रूफ़ सिलसिले के विद्वानों के पास यह कहकर भेज देते थे कि देखो, कोई सुधार हो सकता हो तो कर दो।

इस कार्यवाही का एक उद्देश्य आपका यह भी होता था कि ये लोग इस तरीके से हुज़ूर की रचनाएँ पढ़ लें और हुज़ूर की शिक्षा तथा सिलसिले से परिचित रहें। यह इस विनीत का अपना विचार है, किसी रिवायत पर आधारित नहीं है।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad